कहावतों के जन्म की कहानियाँ

चयन सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Kakavaton Ke Janm kI Kahaniyan (Stories of Origin of Proverbs)
Cover Page picture: Achilles' Heel
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

इतिहास सीरीज़ 5

कहावतों के जन्म की कहानियॉ 7

1 अकिलिस की एड़ी 9

2 पॅडोरा का बक्सा 17

3 ऐडम्स ऐपिल 22

4 हरकुलियन टास्क 24

5 माइडैस टच 25

6 सिसीफस का पत्थर 34

7 बीरबल की खिचड़ी 40

8 तुम क्या राजा हरिश्चन्द्र हो 46

9 द्रौपदी का चीर 52

10 लक्ष्मण रेखा 61

11 तुम तो हनुमान जी हो गये 69

12 घर का भेदी लंका ढावे 75

13 कुॅए का मेंढक 80

14 खान क्या खाता 86

15 बिल्ली के गले में घंटी कौन बॉधे 94

16 न तीन में न तेरह में 99

17 टेढ़ी खीर 103

18 बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद 106

19 मूॅछों की लड़ाई 108

20 ऊॅट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं आता 112

21 तीस मार खॉ की कहानी 115

22 जाट मरा तब जानिये... 123

23 कारूॅ का खजाना 128

इतिहास सीरीज़

प्रारम्भ में हमने एक सीरीज़ प्रारम्भ की थी "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिसके अन्दर हमने संसार के कई देशों की लोक कथाऐं और दंत कथाऐं प्रकाशित की थीं। ऐसा करते समय देखा गया कि एक तरह की कहानी कई देशों में कही जा रही है तो एक और सीरीज़ बनायी गयी "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कहानियाँ शामिल की गयी थीं जिनकी तरह की कहानियाँ और दूसरे देशों में भी उपलब्ध थीं। इस सीरीज़ में **20** से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। इसके बाद लोक कथाओं की कुछ क्लासिक पुस्तकों का भी अनुवाद किया गया। इनकी संख्या भी **30** से ऊपर पहुँच गयी।

अब यह एक नयी सीरीज़ प्रारम्भ की जा रही है "इतिहास" नाम की सीरीज़। यह बहुत ही मजेदार सीरीज़ है। इस पुस्तक में दी गयी कहानियाँ लोक कथाऐं नहीं हैं और न ही कहानियाँ हैं बल्कि सच्ची घटनाऐं हैं। इतिहास हमारे उस आधुनिक जीवन शैली की नींव डालता है जिस पर आज हम खड़े हुए हैं और जिस पर हमारा भविष्य बनता है। इतिहास हमारी पृथ्वी का भूगोल बनाता है। इतिहास हमारा समाज बनाता है। इतिहास हमारी भाषा बनाता है। इतिहास हमारी सभ्यता और संस्कृति बनाता है।

पर यह पुस्तकें इतिहास की भी नहीं है क्योंकि इसमें ऐसी एतिहासिक घटनाऐं भी नहीं दी गयीं हैं जो आपको इतिहास की पुस्तकों में मिलें। यहाँ केवल वही विषय सामग्री दी गयी है जो इधर उधर मिलनी कठिन है या नहीं भी मिल सकती है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब पुस्तकें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो इसलिये ये कहानियाँ यहाँ सरल बोलचाल की हिन्दी भाषा में लिखी गयी है। कहीं कहीं विदेशी विषय सामग्री भी है तो उनमें उनके चरित्रों और स्थानों के नाम सही उच्चारण जानने के लिये अंग्रेजी में फुटनोट्स में दिये गये हैं। इसके अलावा भी बहुत सारे शब्द भारतीयों के लिये नये होंगे वे भी चित्रों द्वारा समझाये गये हैं।

ये सब पुस्तकें "इतिहास सीरीज़ं" के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में आप सबके ज्ञान के घेरे को बढ़ायेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

कहावतों के जन्म की कहानियॉ

सब बच्चे अपने बचपन में कहानियॉ सुनते हैं। वे कहानियॉ चाहे उनके माता पिता सुनायें या बड़े भाई बहिन, या फिर दादी या नानी। और मज़े की बात यह है कि ये कहानियॉ बच्चों को याद भी रहती हैं। और फिर उन्हीं कहानियों को वे अपने बच्चों को सुनाते हैं और फिर वे अपने बच्चों को।

इतिहास सीरीज़ की यह सातवीं पुस्तक है जिसमें रोजमर्रा की कहावतों का जन्म कैसे हुआ इसके विषय में दिया गया है। इस सीरीज़ की सारी पुस्तकों की लिस्ट इस पुस्तक में पीछे दी गयी है। कहानियों के साथ साथ सुनते सीखते हैं कहावतें भी। काफी बड़ी उम्र तक भी बहुत सारे लोग बचपन में सीखी हुई इन कहावतों का इस्तेमाल करते रहते हैं पर वे यह नहीं जानते कि वे कहावतें बनी कैसे। यहॉ हम कुछ ऐसी कहानियॉ दे रहे हैं जिनसे हमारे जीवन की रोजमर्रा की कहावतें निकली हैं। तुम भी शायद इनमें से बहुत सारी कहावतें अपने जीवन में इस्तेमाल करते होगे पर शायद तुम्हें यह नहीं मालूम होगा कि वे कहावतें आयी कहॉ से। वे निकलीं कैसे। इनमें से पहली कुछ कहावतें विदेशी हैं, अंग्रेजी की हैं, फिर बाद में भारत में इस्तेमाल की जाने वाली हैं, हिन्दी की हैं।

उन कहावतों को ठीक से समझना और फिर उनको ठीक से इस्तेमाल करना तभी सम्भव है जब उसके पीछे की कहानी मालूम हो। यह भी हो सकता है तुम लोगों ने भी ये कहानियॉ अपने बचपन में सुनी हों। अगर तुम्हारी सुनी हुई कहानी में से कोई कहानी यहॉ हो और तुम उसको भूल गये हो तो उसको पढ़ कर फिर से अपने बचपन की याद ताजा कर लेना और नहीं तो अपना ज्ञान बढ़ाना और अगर कोई और ऐसी कहानी तुम्हें मालूम हो जिससे कोई कहावत निकली हो और वह यहॉ न लिखी हो तो हमे जरूर लिखना हम उसको इस पुस्तक के अगले ऐडीशन में शामिल करने की कोशिश करेंगे।

बचपन की कहानियॉ बच्चों के दिमाग पर एक गहरी छाप छोड़ जाती हैं और शायद इसी लिये वे कहानियॉ उनको बहुत बड़े हो जाने तक भी याद रहती हैं और वे उनको अपने पोते पोतियों को भी सुनाते रहते हैं।

तो लो पढ़ो इतिहास सीरीज़ की यह सातवीं पुस्तक कुछ कहावतों के जन्म की कहानियॉ....

1 अकिलिस की एड़ी[1]

कहावतों के जन्म की कहानियों के संग्रह की यह पहली कहानी, अकिलिस की एड़ी की कहानी, हमने यूनान यानी ग्रीस देश के साहित्य से ली है।

क्या तुमने कभी "अकिलिस की एड़ी"[2] की कहावत सुनी है? अंग्रेजी में एक कहावत है "अकिलिस हील" जिसका मतलब होता है "कमजोर बिन्दु"[3] या "कमजोरी" जिसको ले कर किसी को नुकसान पहुँचाया जा सके। उदाहरण के लिये "खाना भीम की कमजोरी थी।"[4]

इसी कहावत को अगर हम और ज़्यादा समझा कर लिखने की कोशिश करें तो खाना सचमुच भीम की कमजोरी थी। अगर तुमने महाभारत सीरियल देखा हो तो दुर्योधन उसे इसी कमजोरी से मारना चाहता था। उसने उसके लिये बहुत सारी खीर बनवायी और उसमें जहर मिलवा दिया।

अगर भीम को खाने का शौक न होता जैसे कि दूसरे पांडवों को नहीं था तो वह उसे खीर खिला कर मारने की कोशिश नहीं कर सकता था।

---

[1] Achilles' Heel

[2] Achilles' Heel – means a person's weak point. Achilles is pronounced as "Akilles"

[3] Weak Point

[4] Food wae the Achilles heel of Bheem

यह कहावत अकिलिस की इसी कहानी से आयी है। यह कहानी यह बताती है कि इस कहावत का जन्म कैसे हुआ। तो लो पढ़ो यह कहानी और समझो कि यह कहावत उस कहानी से कैसे निकली और तुम इसे कैसे इस्तेमाल कर सकते हो।

अकिलिस ग्रीस देश के महाकवि होमर के महाकाव्य इलियड[5] का एक मुख्य पात्र है। यह ट्रोजन की लड़ाई[6] का हीरो था। इसकी मॉ थैटिस एक परी या देवी[7] थी और इसका पिता पैल्यूस मिरमीडोन्स का राजा[8] था।

यह कहानी अकिलिस की मौत के बारे में है जो इलियड में तो नहीं दी हुई है पर और दूसरे स्रोत बताते हैं कि अकिलिस ट्रोजन की लड़ाई के अन्त में पैरिस के हाथों मारा गया था। पैरिस ने इसकी एड़ी में अपना तीर मारा था इसी से इसकी मौत हुई।

बच्चो तुम लोगों को यह सुन कर बड़ा अजीब लग रहा होगा न कि उसको मारने के लिये पेरिस ने उसकी एड़ी में ही अपना तीर क्यों मारा। उसकी छाती या सिर आदि जगह पर क्यों नहीं मारा जहॉ अक्सर लोगों को मारना चाहिये। इसकी भी एक कहानी है। यह कहानी तुमको यह भी बतायेगी कि ऐसा कैसे हुआ।

---

[5] Achilles was the hero of Greek poet Homer's epic Iliad. It is the most famous narrative for Achilles' deeds in the Trojan War.

[6] Trojan War – it occurred circa 1250 BC and was one of the final battles between human and immortals.

[7] Thetis – a nymph. Nymph means Goddess or Apsaraa. Greeks believe that Nymphs lived in forests and water bodies

[8] Peleus was the King of Myrmidons

किसी को जान से मारने के लिये साधारणतया लोग छाती में तीर मारते हैं, या फिर सिर में तीर मारते हैं पर पेरिस ने अपना तीर उसकी एड़ी में मारा – क्यों? यही इस कहानी का मुख्य विषय है।

हम यह कहानी थेटिस परी से शुरू करते हैं। थेटिस परी का घर समुद्र में था। दो ग्रीक देवता ज्यूस और पोसीडौन[9] थेटिस से शादी करना चाहते थे।

पर प्रोमेथ्यूस[10] ने ज्यूस को चेतावनी दी कि थेटिस का जो बेटा होगा वह अपने बाप से भी बढ़ कर होगा इसलिये दोनों देवताओं में से किसी को भी थेटिस से शादी नहीं करनी चाहिये। थेटिस को पैल्यूस[11] से ही शादी कर लेनी चाहिये। सो थेटिस ने पैल्यूस से ही शादी कर ली।

पैल्यूस एक बहुत अच्छा पति था और एक बहुत अच्छा पिता था पर वह देवियों आदि के रहन सहन से बिल्कुल ही अनजान था क्योंकि वह धरती का रहने वाला था।

पैल्यूस और थेटिस को यह बेटा इस शर्त पर दिया गया था कि उनका यह बेटा लड़ाई में मारा जायेगा और इस तरह अपनी माँ को बहुत दुखी करेगा। पर थेटिस चाहती थी कि उसके बेटे को न तो कोई जीत सके और न ही कोई मार सके।

---

[9] Zeus and Poseidon – two Greek gods

[10] Prometheus – was a Titan – Titan was a powerful race of Greece.

[11] Peleus – husband of Thetis Nymph and father of Achilles.

इसके आगे यह कहानी दो तरीके से कही जाती है। कुछ का कहना है कि थेटिस ने अकिलिस के सारे शरीर पर अमृत मला और फिर आग के ऊपर लटकाये रखा ताकि उसके सारे सांसारिक लक्षण जल जायें।

पर जब उसके पिता पैल्यूस ने यह देखा तो वह तो सकते में आ गया। उसने तुरन्त ही अपने बेटे को आग के ऊपर से खींच लिया और उसको पालने के लिये चेरों[12] को दे दिया। फिर उसी ने उसको पाला पोसा और पढ़ाया लिखाया।

गुस्से में आ कर पैल्यूस ने थेटिस को अपने घर से निकाल दिया तो थेटिस ने भी अकिलिस को फर्श पर फेंका और अपने पति को यह बताये बिना ही अपने घर समुद्र में चली गयी कि इस रस्म से उनका अकिलिस अमर हो चुका था।

कुछ दूसरे लोगों का कहना है कि थेटिस ने अपने बेटे को अमर बनाने के लिये एक पवित्र नदी स्टिक्स[13] में उसकी एड़ी पकड़ कर उसको उलटा लटका दिया था। क्योंकि उन दिनों ऐसा विश्वास किया जाता था कि जो कोई भी स्टिक्स नदी के पानी को छूता था वह अमर हो जाता था।

---

[12] Cheron – name of the person who brought up Achilles

[13] Styx River – In Greek mythology, Styx is a deity and a river of this name forms the boundary between the Earth and the Underworld – the domain often called Hades, which is also the name of its ruler.

पर क्योंकि उसकी माँ ने उसको ऐड़ी से पकड़ कर पानी में लटकाया था इसलिये उसकी एड़ी उस पानी को नही छू सकी और उसी की वजह से उसकी वह एड़ी सांसारिक रह गयी।[14]

इसी लिये उसका सारा शरीर तो अमर हो गया पर एड़ी अमर नहीं हो सकी और पेरिस को उसको मारने के लिये उसकी एड़ी में तीर मारना पड़ा

यह दूसरी कहानी ज़्यादा सही लगती है क्योंकि तभी तो उसकी एड़ी कमजोर रह गयी और उसमें तीर मारने से वह मर गया।

ट्रोजन की लड़ाई और अकिलिस की मौत

अब क्योंकि देवी ऐरिस[15] थेटिस और पैल्यूस की शादी में नहीं बुलायी गयी थी इसलिये वह बहुत नाराज थी। सो इस बीच उसने इसमें एक चाल खेली।

एक बार राजकुमार पैरिस के दरबार में तीन देवियाँ खड़ी थीं – अफ्रोडाइट, हीरा और अथीना[16]। तो ऐरिस ने गुस्से में आ कर उनकी तरफ एक सोने का सेब फेंका जिस पर लिखा था "सबसे सुन्दर देवी के लिये"।

[14] It is in the same way as Gandhari's sight made Duryodhan's whole body of iron except the covered part with cloth – his thighs.

[15] Eris – a goddess of Discord

[16] Aphrodite, Hera and Athena – three goddesses. Hera was the wife and sister of Zeus.

तो तीनों देवियाँ यह सोच कर उसे बीच में ही पकड़ने के लिये दौड़ीं कि वह इनाम शायद उनके लिये था। जब झगड़ा ज़्यादा बढ़ा तो ट्रौय के राजकुमार पैरिस को इसका फैसला करने के लिये बुलाया गया कि यह सोने का सेब किस देवी को मिलना चाहिये।

देवी अफ्रोडाइट ने पैरिस से पहले ही स्पार्टा के राजा मैलैनौस[17] की पत्नी हेलेन देने का वायदा किया था।

सो यह इनाम तो पैरिस के लिये बहुत अच्छा मौका था सो पैरिस ने अफ्रोडाइट को सबसे सुन्दर देवी घोषित कर दिया और वह सोने का सेब अफ्रोडाइट को दे दिया जिससे हीरा और अथीना दोनों देवियाँ नाराज हो गयीं।

पैरिस को अपने इस लालच और इच्छा की कीमत बाद में अपने परिवार की ज़िन्दगी दे कर और ट्रौय को नष्ट भ्रष्ट होते देख कर चुकानी पड़ी थी।

पैरिस एक बार स्पार्टा के राजा मैलैनौस के घर गया तो उसने पैरिस का बहुत अच्छा स्वागत किया। उस समय मैलैनौस को किसी के मरने में जाना था तो वह तो उसके मरने में चला गया और अपनी पत्नी को घर पर ही छोड़ गया।

इससे पैरिस को राजा मैलैनौस की पत्नी हेलेन के साथ भागने का अच्छा मौका मिल गया और वे दोनों पानी के जहाज से ट्रौय भाग गये।

---

[17] Melenaus, the King of Sparta

जब मैलैनौस वापस लौटा तो उसे पता चला कि उसकी पत्नी हेलेन तो पैरिस के साथ ट्रौय भाग गयी है तो उसने ट्रौय पर चढ़ाई कर दी।[18]

हर आदमी इस लड़ाई के बारे कुछ कुछ सोच रहा था कि एक भविष्य का हाल बताने वाले ने मैलैनौस से कहा कि यह लड़ाई तुम तब तक नहीं जीत पाओगे जब तक कि अकिलिस तुम्हारे साथ लड़ने नहीं आयेगा। इसलिये मैलैनौस ने अपनी इस लड़ाई के नवें साल में अकिलिस को लड़ने के लिये बुलाया।

ट्रोजन की यह लड़ाई दस साल तक चली थी। अकिलिस नवें साल में स्पार्टा के मैलैनौस की तरफ से यह लड़ाई लड़ने के लिये आया था। बाद में मैलैनौस और पैरिस की आपस में अकेले की लड़ाई भी हुई। उस समय पैरिस मरने ही वाला था कि देवी ने उसे बचा लिया।

अकिलिस की माँ थेटिस ने फिर एक देवी से अकिलिस के लिये एक जिरहबख्तर[19] तैयार करने की प्रार्थना की जो उसकी रक्षा कर सके। सो उसको पहन कर अकिलिस फिर से सबको मार गिराने लगा।

उधर पैरिस ने अपोलो देवता की सहायता से अकिलिस की एड़ी में तीर मार कर उसकी हत्या कर दी।

---

[18] This war is famous as Trojan War in Greek Mythology and has been described at many places including Homer’s Iliad and Odyssey.

[19] Translated for the word “Armor”

उसके शरीर का यही एक हिस्सा था जो उस पवित्र पानी से अनछुआ रह गया था। वहीं वह तीर काम कर सकता था सो उसने उसके उसी जगह तीर मार कर उसको मार दिया।

यह कहावत तभी से इस्तेमाल में आती है।

जब कोई चीज़ पूरी तरीके से सारी सुरक्षित हो, या पूरी तरीके से मजबूत हो, या उसको कहीं भी कोई भी नुकसान न पहुँचाया जा सकता हो पर उसमें कहीं एक छोटी सी जगह असुरक्षित हो या कमजोर हो या उस छोटी सी जगह पर वार कर के उसको नष्ट किया जा सकता हो तो उस छोटी सी जगह को "ऐकिलिस हील" या कमजोर बिन्दु कहते हैं।

2 पॅडोरा का बक्सा[20]

यह कहावत "पॅडोरा का बक्सा" एक यूनानी लोक कथा "पॅडोरा का बक्सा" पर आधारित है जो वहॉ की बहुत ही मशहूर कथा है। पॅडोरा का बक्सा का मतलब होता है "परेशानियों या बुराइयों का खजाना"। तो लो पढ़ो यह कहानी और जानो कि तुम इस कहावत को कैसे इस्तेमाल कर सकते हो।

दो भाई थे प्रोमेथ्यूस और ऐपीमैथ्यूस[21]। दोनों दिल के बहुत अच्छे थे और वे दोनों ही दुनियॉ में रहने वालों का भला चाहने वाले थे।

हैफेस्टस[22] देवताओं का लोहार था और लैमनोस द्वीप[23] पर रहता था। एक बार प्रोमेथ्यूस लैमनोस द्वीप पर गया और वहॉ से उसने हैफेस्टस की भट्टी से आग चुरा कर दुनियॉ के लोगों को दे दी ताकि वे उससे रोशनी और गर्मी ले सकें।

तो ज़्यूस[24] उससे इस बात पर बहुत नाराज हुआ और इतना नाराज हुआ कि उसने सोचा कि आदमियों को उसका अपमान करने की सजा मिलनी ही चाहिये।

---

[20] Pandora's Box – a folktale of Greece, Europe. Taken from the Web Site : http://www.historyforkids.org/learn/greeks/religion/myths/pandora.htm

[21] Prometheus and Epimetheus – they were two brothers

[22] Hephaestus is the handyman of Greek gods, like Vishwakrmaa of Hindu gods

[23] Lemnos Isle

[24] Zeus – Zeus is the Greek Sky and Thunder god. He ruled as King of the gods of Mount Olympus.

उसने प्रोमेथ्यूस को कई सालों तक जंजीरों में बाँध कर रखा पर शायद इतनी सजा उसके लिये काफी नहीं थी सो उसने उसके भाई को सजा देने का भी एक प्लान बनाया।

प्रोमेथ्यूस के जंजीरों से बाँधे जाने के बाद ऐपीमैथ्यूस अब अकेला रह गया था सो ज़्यूस ने उससे कहा कि वह एक स्त्री बनाये।

ऐपीमैथ्यूस ने ओलिम्पस पहाड़[25] पर पानी और मिट्टी से एक स्त्री बनायी। ज़्यूस ने उसका नाम रखा पॅडोरा। पॅडोरा यानी "सारी भेंटों का खजाना"।

यूनान के लोगों के अनुसार पॅडोरा दुनियाँ की पहली स्त्री थी। जब वह बन कर तैयार हुई तो कई देवी देवताओं ने उसको भेंटें दीं।

अथीना ने उसको कपड़े पहनाये। अफ्रोडाइट ने उसको सुन्दरता दी। अपोलो ने उसको संगीत सिखाया और हरमीस ने उसको बोलने की ताकत दी।[26]

सो प्रोमैथ्यूस से बदला लेने के लिये ज़्यूस ने पॅडोरा को बना कर उसे धरती पर भेज दिया और उसे प्रोमेथ्यूस के भाई ऐपीमैथ्यूस को शादी में भेंट कर दिया।

---

[25] Mount Olympus

[26] Athena and Aphrodite are Greek goddesses and Apollo and Hermes are Greek gods. They are the sons of Zeus.

अब प्रोमेथ्यूस तो आगे का भी देख सकता था पर एपीमैथ्यूस को ऐसे ख्याल नहीं आते थे। इसलिये प्रोमेथ्यूस ने अपने भाई को ज़्यूस से कोई भी भेंट लेने के लिये मना कर रखा था।

पर पॅडोरा को पा कर ऐपीमैथ्यूस इतना खुश हुआ कि वह यह भूल ही गया कि उसके भाई ने उसको ज़्यूस से कोई भी भेंट लेने के लिये मना कर रखा था।

ज़्यूस ने शादी में पॅडोरा को एक छोटा सा बक्सा भी दिया जिसमें एक बड़ा सा ताला लगा हुआ था[27]। उसने पॅडोरा से उस बक्से को कभी न खोलने के लिये कहा और उसकी चाभी उसने ऐपीमैथ्यूस को दे दी।

पर अब जैसा कि होता है कि जिस आदमी को जिस काम को करने से मना करो तो वह पहले उसी को करना चाहता है सो पॅडोरा को भी यह जानने की बड़ी उत्सुकता थी कि उस बक्से में क्या था। वरना नहीं तो किसी ऐसे बक्से को उसको दिये जाने का मतलब ही क्या था जिसको वह उसको खोल ही न सकती हो।

---

[27] Some say that it was a sealed vase or jar and to open it she had to breake its seal. Infact in original story “Pithos” word has been used for this box, or pitcher or vase. Pithos means a large jar which may be as large as it can contain a small person. It was used for storage of wine, oil, grain or other provisions, or, ritually, as a container for a human body for burying. In the case of Pandora, this jar may have been made of clay for use as storage as in the usual sense, or of bronze metal as an unbreakable prison.

उसने ऐपीमैथ्यूस से बहुत कहा कि वह उस बक्से को खोल कर देखना चाहती है पर उसने हमेशा ही उस बक्से को खोलने से मना कर दिया।

अन्त में जब उससे नहीं रहा गया तो एक दिन जब ऐपीमैथ्यूस सो रहा था तो पॅडोरा ने उसके पास से उस बक्से की चाभी चुरा ली और उसको खोल दिया।

ओह, उस बक्से में से तो सब किस्म की परेशानियाँ निकल पड़ीं जिनका लोगों को पहले कभी पता ही नहीं था।

बीमारियाँ और चिन्ताऐं, जुर्म और नफरत, जलन और बहुत सारी बुरी बुरी चीज़ें। वे सब बुरी चीज़ें छोटे छोटे कीड़ों के रूप में चारों तरफ उड़ने लगीं।

यह देख कर पॅडोरा बहुत दुखी हुई और पछताने लगी कि उसने वह बक्सा खोला ही क्यों। उसने उन सब कीड़ों को पकड़ कर उस बक्से में बन्द भी करना चाहा पर अब तो बहुत देर हो चुकी थी। वे सब कीड़े उड़ उड़ कर बाहर चले गये थे।

पॅडोरा तो वहाँ बैठी रोती रह गयी। पर आखिरी चीज़ जो उस बक्से में से निकल कर उड़ी वह इतनी बुरी नहीं थी। बुरी क्या बल्कि वह तो अच्छी चीज़ थी। और वह थी "आशा"।

यह ज़्यूस ने आखीर में इसलिये रखी थी ताकि इतनी सारी खराब चीज़ों को सहने के बाद भी लोग आशा न छोड़ें।

पॅडोरा बहुत दुखी थी कि शायद ज़्यूस अब उससे बहुत नाराज होगा और उसको सजा देगा क्योंकि उसने उसकी बात नहीं मानी पर ज़्यूस ने ऐसा कुछ नहीं किया। उसने उसको कोई सजा नहीं दी क्योंकि वह तो जानता था कि ऐसा तो होना ही था।

तो जब कोई किसी बन्द चीज़ को इस उम्मीद में खोलता है कि उसमें उसे कोई बहुत अच्छी चीज़ मिलेगी पर शुरू से ही उसको उस में खराब चीज़ें या नाउम्मीदी मिलती जाती है फिर भी वह उसमें उन खराब चीज़ों को इस उम्मीद में निकालता रहता है कि कभी तो कुछ अच्छा निकलेगा।

या फिर कोई किसी काम को इस उम्मीद में शुरू करता है कि वह उसको अच्छा फल देगा पर उसमें उसको असफलता ही मिलती जाती है फिर भी वह उसको करता ही रहता है कि कभी तो उस काम के करने का फल अच्छा होगा वही पॅडोरा का बक्सा कहलाता है।

जब ऐसा होता है तो लोग कहते हैं कि "यह तुमने क्या पॅडोरा का बक्सा खोल लिया। अब लगे रहो इसमें।" या "उफ। यह तुम क्या पंडोरा का बक्सा खोल बैठे हो?"

3 ऐडम्स ऐपिल

"ऐडम्स ऐपिल" कहावत ईसाई और ज्यू धर्म की एक कहावत है। इस कहावत के कई अर्थ हैं। इस समय हम तुमको उसका जो सबसे ज़्यादा लोकप्रिय अर्थ है वही यहाँ बतायेंगे।

ईसाई धर्म की धार्मिक किताब बाइबिल में लिखा है कि भगवान ने यह दुनियाँ छह दिन में बनायी। दुनियाँ बनाने के बाद उसने चारों तरफ देखा और देखा कि सब कुछ बहुत सुन्दर था। फिर उसने सातवें दिन आराम किया।

फिर भगवान ने ऐडम ओर ईव बनाये – दुनियाँ का पहला पुरुष और पहली स्त्री। भगवान ने ऐडम और ईव बना कर उनको अपने ईडन के बागीचे में रख दिया और उनको उसमें लगे एक पेड़ के फल खाने के लिये मना कर दिया। यह पेड़ शायद सेब का पेड़ था।[28]

पर शैतान चुप नहीं बैठा। वह एक साँप का रूप रख कर वहाँ आया और ऐडम और ईव को उस पेड़ का फल खाने के लिये उकसाया।

कहते हैं कि जब ऐडम ने भगवान का मना किया हुआ फल सेब खाया तो उस समय वह उसके गले में अटक गया और वहाँ

[28] There is no evidence anywhere that it was an apple's tree, but it was a "fruit" tree whose fruit was forbidden for them to eat.

उसका गला कुछ फूल सा गया जिससे यह पता चलता था कि उसने कुछ गलत काम किया है।

सो गले के उस उठे हुए हिस्से को आज इसी लिये "ऐडम्स ऐपिल" कहते हैं। इसका अर्थ होता है "जो चीज़ न निगली जा सके न उगली जा सके।"

2 ऐडम्स ऐपिल

ऐडम्स ऐपिल "मना किये गये" किसी ऐसे काम को करने को भी कहा जाता है जिसको या तो मना किया हुआ होता है या फिर जिसका फल नुकसान देने वाला या दुख देने वाला होता है।

अगर किसी को किसी काम के करने के लिये मना करना हो तो तुम उससे कह सकते हो "यह तुम्हारे लिये ऐडम्स ऐपिल" है। यानी तुमको यह काम बिल्कुल भी नहीं करना है नहीं तो इसका बुरा फल भुगतोगे।

यह इसलिये क्योंकि ऐडम ने भगवान का मना किया गया फल खाया था जिसकी वजह से उसको ईडन के बागीचे से निकाल कर धरती पर भेज दिया गया था। इसके अलावा फिर उसको मौत भी आने लगी थी वरना उससे पहले वह अमर था।

अब क्योंकि उसके सेब खाने का बुरा फल हुआ कि वह स्वर्ग से धरती पर आ गया और अमर से मरने वाला हो गया तो उसको भी ऐडम्स ऐपिल ही कहते हैं।

4 हरकुलियन टास्क[29]

हरकुलियन टास्क एक अंग्रेजी की कहावत है जो अक्सर किसी बहुत बड़े और मुश्किल काम को शुरू करने पर कही जाती है जैसे "विश्व विद्यालय की स्थापना करना तो अकेले आदमी के लिये एक हरकुलियन टास्क है।"

बच्चो तुम लोगों ने हरकुलिस[30] का नाम तो सुना ही होगा। हरकुलिस यूनानी यानी ग्रीक दंत कथाओं का एक बहुत बड़ा हीरो है। वह अपनी शक्ति और साहस के लिये बहुत मशहूर है।

असल में वह 11 अजीब जानवरों को मारने और राजा औजियास[31] की घुड़साल को साफ करने के लिये बहुत मशहूर है। ये सब काम या तो बहुत समय लेने वाले थे या फिर इनको करने के लिये बहुत ताकत की जरूरत थी।

इसलिये हरकुलियन टास्क या हरकुलियन ऐफर्ट[32] आदि शब्द किसी ऐसे काम को लेने के लिये या उसे पूरा करने के लिये इस्तेमाल किये जाते हैं जो या तो बहुत समय लेते हैं या फिर बहुत मेहनत से होते हैं। कोई भी चीज़ जो बहुत बड़ी हो वह भी हरकुलियन कहलाती है।

[29] Herculian Task
[30] Hercules – a hero of Greek mythology
[31] Augeas was a King.
[32] Herculean task, or Herculean effort

5 माइडैस टच[33]

बच्चों तुमने कभी माइडैस टच की कहावत सुनी है? नहीं? तो लो आज हम तुम्हें बताते है कि यह माइडैस टच क्या होता है। माइडैस एक आदमी का नाम है और टच माने "छूना"। सो माइडैस टच माने माइडैस का छूना।

अब यह माइडैस टच या यह माइडैस का छूना क्या है जो इतना मशहूर हो गया कि लोगों ने इसकी कहावत बना दी। अगर तुमको इस राजा की कहानी नहीं मालूम है तो लो पढ़ो यह कहानी राजा माइडैस की। यह कहानी तुम्हें बतायेगी कि इस कहावत का मतलब क्या है और इसको कहाँ और कैसे इस्तेमाल किया जाता है।

माइडैस का नाम यूनान की पुरानी कथाओं में पाया जाता है। कहा जाता है कि राजा माइडैस ईसा से **1000** साल से भी पहले, बल्कि ट्रोजन की लड़ाई से भी बहुत पहले[34], यूनान में रहता था।

यह वहाँ का एक राजा था जो जिस चीज़ को भी छू लेता था वह सोना बन जाती थी। इसी लिये इस "छूने" का नाम "माइडैस टच" या "सुनहरा छूना"[35] पड़ गया।

---

[33] Midas Touch – Midas Touch is a proverb originated from Greek King named "Midas"

[34] Trojan War was waged against the City of Troy by the Greeks – a very important war in Greek mythology. Perhaps it occurred during 200-300 BC.

[35] Golden Touch

यूनानी दार्शनिक अरस्तू[36] का तो यहाँ तक कहना है कि राजा माइडैस ने अपने इस सुनहरी छूने से आजादी पाने के लिये बहुत प्रार्थनाऐं कीं पर भगवान ने उसकी एक न सुनी और अपने इसी लालच की वजह से वह भूखा ही मर गया था क्योंकि वह जो कुछ भी छूता था वह सोना बन जाती थी। इसकी वजह से वह न तो खा पी पाता था और न ही किसी को छू पाता था।

इसकी कहानी कुछ इस तरह है।

यह बहुत पुरानी बात है कि यूनान देश में माइडैस नाम का एक राजा रहता था। उसके एक प्यारी सी बेटी थी जिसका नाम था मैरीगोल्ड[37]। राजा अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था।

यह राजा बहुत अमीर था और ऐसा कहा जाता है कि उसके पास दुनियाँ के किसी भी राजा से बहुत ज़्यादा सोना था। उसके बड़े से किले का एक बड़ा सा कमरा तो केवल सोने के टुकड़ों से ही भरा हुआ था।

धीरे धीरे माइडैस सोने का इतना लालची हो गया कि उसको सोने के अलावा दुनियाँ की और कोई चीज़ अच्छी ही नहीं लगती थी। यहाँ तक कि वह उसको अपनी प्यारी सी गुलाबी गालों वाली बेटी से भी ज़्यादा चाहने लग गया था। इसके अलावा उसकी सोना पाने की इच्छा और भी बढ़ती ही जा रही थी।

---

[36] Greek philosopher Aristotle

[37] Marigold – name of the daughter of King Midas

एक दिन वह अपने सोने वाले कमरे में बैठा सोना देख देख कर बहुत खुश हो रहा था कि उसके सामने एक परी लड़का[38] आ खड़ा हुआ।

उस लड़के का चेहरा एक अजीब रोशनी से चमक रहा था। उसके टोप और पैरों में पंख लगे हुए थे। उसके हाथ में एक अजीब सी दिखायी देने वाली जादू की छड़ी थी। उस जादू की छड़ी के ऊपर भी पंख लगे हुए थे।

उस परी लड़के ने कहा — "राजा माइडैस, तुम तो दुनियाँ के सबसे अमीर आदमी हो। दुनियाँ में और दूसरा कोई ऐसा राजा नहीं जिसके पास तुम्हारे पास जितना सोना हो।"

राजा बोला — "हाँ, यह सच हो सकता है। देखो मेरा यह कमरा पूरा सोने से भरा हुआ है। पर मुझे अभी और सोना चाहिये क्योंकि सोना ही दुनियाँ में सबसे ज़्यादा अच्छी और सबसे ज़्यादा सुन्दर चीज़ है।"

लड़के ने पूछा — "क्या तुम यह बात यकीन के साथ कह सकते हो कि दुनियाँ में सोने से ज़्यादा अच्छी और कोई चीज़ नहीं है?"

राजा बोला — "हाँ, यह बात मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ।"

---

[38] Translated for the words "Fairy Boy" – normally fairies are women, but there are men also.

लड़का बोला — “अगर मैं तुम्हारी किसी एक इच्छा को पूरी करूँ तो क्या तुम सोना और लेना चाहोगे?”

राजा बोला — “अगर तुम मेरी केवल एक इच्छा पूरी करोगे तो मैं तो बस यही माँगूँगा कि जो भी चीज़ मैं छू लूँ वह सोना हो जाये।”

लड़का बोला — “तो चलो आज मैं तुम्हारी यह इच्छा पूरी कर देता हूँ। कल सुबह सूरज निकलने के बाद जो भी चीज़ तुम छुओगे वह सोना बन जायेगी। पर मैं तुमको यह चेतावनी देता हूँ कि तुम्हारी यह इच्छा तुमको खुश नहीं कर पायेगी।”

राजा बोला — “मैं यह खतरा मोल लेने के लिये तैयार हूँ।”

अपनी इच्छा इतनी जल्दी पूरी होती देख कर तो राजा को रात भर नींद नहीं आयी। अगले दिन वह सुबह सवेरे जल्दी ही उठ गया।

वह यह देखने के लिये बहुत उत्सुक था कि उस परी लड़के की बात सच निकलती है या नहीं। अगर उसकी बात सच निकलती है तब तो उसके पास बहुत सारा सोना हो जायेगा और वह दुनियाँ का सबसे अमीर आदमी हो जायेगा।

सो जैसे ही सूरज निकला उस लड़के की बात की सच्चाई की जाँच के लिये उसने अपना पलंग धीरे से छुआ – लो वह तो तुरन्त ही सोने का हो गया। राजा की खुशी का ठिकाना न रहा।

खुश हो कर उसने फिर अपनी कुर्सियाँ और मेज छुईं। तो लो, वे सब भी सोने की हो गयीं। अब तो राजा खुशी से पागल सा हो गया। वह अपने कमरे में घूम घूम कर वहाँ रखी हर चीज़ को छूने लगा और उसकी छुई हुई हर चीज़ सोने में बदलने लगी।

कुछ देर यह जादू देख कर वह सन्तुष्ट हो गया कि उस लड़के की कही बात सच हो रही थी। सो अब उसने नाश्ता करने जाने का विचार किया।

वह मेज पर पहुँचा और पानी का गिलास उठा कर पानी पीना चाहा तो वह तो गिलास भी सोने का हो गया। पर जैसे ही उसने गिलास मुँह से लगाया और पानी उसके होठों से लगा तो वह पानी उसके होठों से लगते ही सोने का हो गया और वह पानी ही नहीं पी सका।

फिर उसने डबल रोटी उठा कर खानी चाही तो वह भी उसके हाथ से छूते ही सोने की हो गयी। फिर उसने कुछ माँस खाना चाहा तो वह भी सोने का हो गया।

इस तरह वहाँ उसने जो भी कुछ छुआ वह सब सोने का हो गया और वह कुछ भी नहीं खा सका और बिना कुछ खाये पिये ही चला आया।

तभी उसकी प्यारी बेटी बागीचे में से दौड़ी दौड़ी आयी। सारी ज़िन्दा चीज़ों में वह अपनी बेटी को ही सबसे ज़्यादा प्यार करता था।

उसके आते ही राजा ने उसको अपनी गोद में उठा लिया। पर यह क्या? हाथों से छूते ही उसकी प्यारी बेटी भी सोने की मूर्ति बन गयी।

राजा यह देख कर तो इतना डर गया जैसे किसी ने उसकी ज़िन्दगी की सारी खुशियाँ छीन ली हों। अब वह और नहीं सह सका। उसने उस परी लड़के को तुरन्त ही आवाज लगायी जिसने उसकी यह इच्छा पूरी की थी।

राजा ने उससे भीख माँगी — "तू अपना यह भयानक वरदान वापस ले ले ओ परी लड़के। मेरी सारी जमीन ले ले, मेरा सारा सोना ले ले, मेरी हर चीज़ ले ले, पर मेरी बेटी मुझे वापस दे दे।"

वह लड़का तुरन्त ही वहाँ आ गया और बोला — "क्या तुम अभी भी यही सोचते हो कि सोना ही दुनियाँ में सबसे बड़ी चीज़ है?"

राजा रो कर बोला — नहीं नहीं, मुझे अब इस पीले सोने को देखने से भी नफरत हो गयी है।"

लड़के ने पूछा — "तो क्या अब तुमको अपना यह "सुनहरा वरदान" नहीं चाहिये?"

राजा बोला — "नहीं, अब मुझे अपना सबक मिल गया है। अब मैं यह बिल्कुल भी नहीं सोचता कि सोना ही दुनियाँ की सबसे सुन्दर और अच्छी चीज़ है। तुम अपना यह वरदान वापस ले लो।"

वह लड़का बोला — "ठीक है। यह लो, यह घड़ा लो और बाहर बागीचे के फव्वारे से इसमें पानी भर लाओ। वह पानी उन सब चीज़ों पर छिड़क दो जिनको तुमने छुआ है और वे सोने की हो गयी हैं। उस पानी के छिड़कते ही वे सब पहले जैसी हो जायेंगी।"

राजा ने उस लड़के से तुरन्त ही वह घड़ा ले लिया और बाहर बागीचे की तरफ भागा। पानी भर कर सबसे पहले वह अपनी बेटी की तरफ भागा भागा आया और उस पर वह पानी छिड़का।

तुरन्त ही सोने की वह मूर्ति उसकी प्यारी बेटी मैरीगोल्ड बन गयी। उसने उसको प्यार से तुरन्त ही चूम लिया।

फिर उसने वह पानी उन सब चीज़ों पर छिड़का जो जो उसने छुई थीं। पानी छिड़कते है वे सब चीज़ें फिर से अपने असली रूप में आ गयी थीं। उसकी डबल रोटी, माँस, मक्खन सभी कुछ असली हो गया था।

राजा ने सुबह से कुछ खाया नहीं था। उसे भूख लग रही थी सो वह अपनी बेटी को गोद में उठा कर खाने की मेज पर ले गया। वहाँ जा कर सबसे पहले उसने ठंडा पानी पिया। ओह कितना स्वादिष्ट था वह ठंडा पानी। वह अब भूखों की तरह नाश्ता कर रहा था।

इस घटना के बाद राजा को सोने से इतनी नफरत हो गयी कि उसने अपने कमरे में रखी हर चीज़ जो उसने छुई थी – पलंग,

कुरसी, मेज और और भी कुछ, उस सब पर वह पानी छिड़क दिया।

पानी छिड़कते ही वे सब चीज़ें वापस अपने असली रूप में आ गयीं। उसके बाद उसने सोने के लिये अपना प्यार छोड़ दिया।

तभी से यह माइडैस टच की कहावत बन गयी। माइडैस टच दोनों मतलबों में इस्तेमाल किया जा सकता है – अच्छे मतलब के लिये भी और खराब मतलब के लिये भी।

अच्छे मतलब में इसको तब इस्तेमाल करते हैं जब किसी के कोई काम हाथ में लेने से या उसमें दखल देने से या छूने से भी कोई काम बन जाता है या किसी को फायदा पहुँचाता है क्योंकि माइडैस के हाथ लगाते ही उसकी सारी चीज़ें सोना बन गयी थीं।

जैसे अगर कोई साधु जमीन पर से उठा कर किसी बीमार को धूल भी खाने को दे दे और वह बीमार ठीक हो जाये तो यह उसका माइडैस टच कहलायेगा।

क्योंकि इसका मतलब यह हुआ कि वह साधु जिस चीज़ को भी छू लेगा वह दूसरे के लिये फायदेमन्द हो जायेगी। तो इसके लिये यह कहा जायेगा कि "उस साधु के हाथ में तो माइडैस टच है।"

इसको खराब मतलब से इस तरह इस्तेमाल करते हैं कि अगर कोई आदमी किसी काम में दखल दे दे और वह काम खराब हो जाये तो भी वह माइडैस टच ही कहलायेगा।

क्योंकि जैसे राजा माइडैस के छूने के बाद हर चीज़ सोना हो गयी और वह न कुछ खा सका न पी सका। यहाँ तक कि उसकी सबसे प्यारी बेटी भी सोने की हो गयी जो उसके लिये बहुत ही बदकिस्मती की बात थी उसी तरह से इस आदमी का दखल भी दूसरों के काम बिगाड़ देता है तो यह भी माइडैस टच ही कहलायेगा पर यह इस अर्थ में कम इस्तेमाल होता है।

6 सिसीफस का पत्थर[39]

सिसीफस एक यूनानी चरित्र है। यूनानी दंतकथाओं के अनुसार सिसीफस ने कोरिन्थ[40] राज्य की स्थापना की और यह वहाँ का पहला राजा बन गया।

यह एक धोखाधड़ी करने वाला राजा के नाम से मशहूर हो गया था। इसने मौत को एक बार भी नहीं दो बार धोखा दिया। इसको अपने इन कर्मों की सजा तब मिली जब ज़्यूस[41] ने इसको अनन्त काल तक के लिये सजा दी।

सिसीफस शायद नरक में मिली अपनी इसी सजा के लिये ज़्यादा मशहूर है बजाय अपनी ज़िन्दगी के कामों के। सिसीफस को एक पत्थर को पहाड़ी पर ऊपर ले जाने की सजा दी गयी थी। और जब वह पत्थर पहाड़ की चोटी पर पहुँच जाता था तो वह पत्थर अपने आप ही फिर नीचे लुढ़क जाता था।

देवता लोग होशियार थे। किसी बेकार के काम को बराबर करते रहना भी एक सजा ही तो है। सिसीफस को यह सजा क्यों दी गयी इसकी कई कहानियाँ हैं।

---

[39] Stone of Sisyphus. This story is given in great poet Homer's Odyssey (11:593) also.

[40] Corinth - was one of the largest and most important cities of Greece, with a population of 90,000 in 400 BC.

[41] Zeus is the god of the sky, lightning and the thunder in Ancient Greek religion and legends, and ruler of all the gods on Mount Olympus.

एक कहानी के अनुसार ज्यूस ऐजीना को उठा कर अपने देश ले गया। ऐजीना धरती पर ऐसोपस[42] की बेटी थी।[43] सिसीफस ने इस घटना को अपने शहर कोरिन्थ[44] में बैठे बैठे देखा।

सिसीफस इस बात पर राजी हो गया कि अगर ऐसोपस अपना कोरिन्थ का किला उसे दे देगा तो वह ऐसोपस को यह बता देगा कि ऐजीना को कौन उठा कर ले गया है।

यह सौदा कर के सिसीफस को ज़्यूस के खिलाफ गवाही देने पर उसको अपने और अपने लोगों के लिये खुशी और दुनियावी सम्पत्ति तो मिल गयी पर इससे देवता लोग गुस्सा हो गये। ज़्यूस ने मौत की आत्मा थानाटोस[45] से कहा कि वह जा कर सिसीफस को जंजीरों में बाँध ले।

इस मौके पर चैरोन[46] वहाँ हाजिर नहीं था जिसका काम आत्माओं को पाताल तक रास्ता दिखाना था। सो सिसीफस को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि वह वहाँ क्यों नहीं है। सो उसने मजाक में मौत से पूछा कि वह उसे यह दिखाये कि वे जंजीरें कैसे काम करती थीं।

जब थानाटोस उसको यह दिखाने लगा तो मौका देख कर सिसीफस ने उसी को उन जंजीरों से बाँध दिया।

---

[42] Asopus – the River god
[43] Aegina was the daughter of Asopus
[44] Zeus took Aegina to his own country.
[45] Thanatos – the personification of Death
[46] Charon – the guide to souls to

जब मौत की आत्मा को इस तरह से बाँध लिया गया तो इस कैद के बीच धरती पर कोई आदमी नहीं मरा। इससे ऐरैस देवता[47] को बहुत गुस्सा आया क्योंकि अब उसे लड़ाइयों में ज़्यादा मजा ही नहीं आ रहा था क्योंकि कोई आदमी नहीं मर रहा था। सो वह बीच में आया और उसने मौत को आजाद कराया और सिसीफस को फिर से मौत के हवाले कर दिया।

एक दूसरी कहानी के अनुसार उसने मौत को एक बार और पकड़ा और उसका इस बार का मौत को पकड़ना ज़्यादा सफल रहा।

इस बार हेड्स[48] को उसे पकड़ने के लिये भेजा गया पर वह तो खुद ही जंजीरों में बँध कर रह गया। सो फिर दुनियाँ में कोई नहीं मरा और जब कोई नहीं मरा तो देवताओं को मिलने वाली बलियाँ बन्द हो गयीं। इसके अलावा बूढ़े और बीमार लोग बहुत परेशान रहने लगे।

तब देवताओं ने सिसीफस की ज़िन्दगी इतनी खराब कर दी कि वह मौत की इच्छा करने लगा। अब उसके पास और कोई रास्ता नहीं रह गया था कि वह मौत को छोड़ देता। सो उसने मौत को छोड़ दिया।

[47] Ares god is the son of Jeus and Hera and is Greek god of War

[48] Hades is another name of Satan

अपने मरने से पहले उसने अपनी पत्नी का प्यार जॉचने के लिये उससे कहा कि वह उसकी लाश को चौराहे पर छोड़ दे। इस वजह से उसकी लाश स्टिक्स नदी[49] के किनारे फेंक दी गयी।

जब वह मरा और उसने अपने आपको पाताल में पाया तो इस बार उसने हेड्स[50] की दयालु पत्नी को इस बात पर राजी कर लिया कि वह उसको ज़िन्दा लोगों की दुनियॉ में भेज दे। क्योंकि उसकी पत्नी ने उसको दफ़नाते समय उसकी परम्परागत रस्में नहीं कीं और उसकी लाश का अपमान किया।

सो उसको धरती पर लौटने की इजाज़त दे दी गयी। जब वह धरती पर आया तो उसने अपनी पत्नी को बहुत डॉटा कि उसने उसके शरीर को बिना परम्परागत रस्में किये क्यों दफ़नाया।

एक बार धरती पर लौटने के बाद उसने फिर से नरक जाने से मना कर दिया। कुछ का कहना है कि उसको घसीट कर पाताल में ले जाया गया जबकि दूसरों का कहना है कि उसने फिर से मौत की पत्नी को चाल में फॉसा और उसने उसे छोड़ दिया।

फिर वह बहुत दिनों तक बूढ़ा होने तक ज़िन्दा रहा क्योंकि मौत फिर उसके पास जाते से डरती रही कि कहीं राजा उसको फिर से न बॉध ले।

[49] Styx is a Greek mythical river

[50] Hades – another name of Satan

अबकी बार जब सिसीफस मरा तो वह किसी भी तरह वहाँ से नहीं बच सका क्योंकि इस बार ज़्यूस बीच में आ गया था। देवताओं के राजा ज़्यूस ने इस बार यह तय किया कि वह किसी भी इन्सान को देवताओं के साथ कोई चालाकी नहीं करने देगा।

सो उसने उसको यह सजा दी कि वह एक बड़े से पत्थर को एक पहाड़ी पर ऊपर की तरफ धकेलता रहेगा जब तक वह उस पहाड़ की चोटी तक न पहुँच जाये पर वहाँ पहुँचने पर वह पत्थर अपने आप ही नीचे लुढ़कता आ जाता था।

इस पर उसको वह पत्थर उस पहाड़ की चोटी तक फिर से ले जाना होता था जब तक कि वह वहाँ पर जा कर ठहर न जाये पर वह वहाँ ठहरता ही नहीं था। क्योंकि जैसे ही वह वहाँ तक पहुँचता था कि वह फिर से नीचे गिर जाता था। इस तरह से वह उसको अनन्त काल तक करना था।

लोग सिसीफस को उसके धरती पर किये गये व्यवहार के लिये और नरक में सजा दोनों के लिये एक बेवकूफ हीरो मानते हैं जो प्राकृतिक नियमों के तोड़ने में छोटी छोटी चीज़ों में अपनी खुशी ढूँढता है और मानवता को दुख देता है वह देवताओं की बेइज़्ज़ती करता है मौत से नफरत करता है और ज़िन्दगी को हद से ज़्यादा प्यार करता है।

उसकी सजा यही थी कि वह अनन्त काल के लिये बिना किसी उद्देश्य को हासिल किये मेहनत करता रहे। इसी को सिसीफस का

पत्थर कहते हैं। सिसीफियन[51] शब्द उस ऐसे काम के लिये भी आता है जो कभी पूरा न हो।

[51] Sisyphean task

7 बीरबल की खिचड़ी[52]

बच्चो, यह कहावत हमने एशिया महाद्वीप के भारत देश की कहानियों से ली है। तुमने अकबर बीरबल का नाम तो सुना ही होगा और उनकी आपस की कहानियाँ भी सुनी होंगी।

उन कहानियों में से बीरबल की यह कहानी बहुत मशहूर है और इतनी मशहूर है कि अब तो यह एक कहावत बन गयी है – बीरबल की खिचड़ी पकाना। पर तुमको शायद यह पता नहीं होगा कि यह कहावत बनी कैसे। तो लो सुनो यह कहानी और जानो कि इस कहावत को कहाँ और कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं।

जाड़े का मौसम था। सारे तालाबों का पानी जमने जैसा हो रहा था। अकबर और बीरबल अपने शाही बागीचे में सैर कर रहे थे।

ठंड महसूस करने के लिये अकबर ने एक तालाब के पानी में अपना हाथ डाला और तुरन्त ही बाहर निकाल लिया। उस पानी की ठंड महसूस कर के अकबर के दिमाग में एक ख्याल आया और उन्होंने बीरबल से पूछा — "बीरबल, क्या कोई आदमी पैसों के लिये कुछ भी कर सकता है?"

बीरबल बोले — "जी जनाब, अगर उसको पैसों की वाकई जरूरत हो तो।"

---

[52] Read this and more stories of Akbar Birbal in English at the Web Site : http://www.sushmajee.com/shishusansar/stories-birbal/birbal-1/birbal-31.htm

बादशाह बोले — "अच्छा तो इसको साबित करो।"

अगले दिन बीरबल एक बहुत ही गरीब आदमी को ले कर आये जिसके पास कोई पैसा नहीं था और बोले — "हुजूर यह आदमी पैसों के लिये कुछ भी कर सकता है।"

बादशाह ने उस आदमी से पूछा — "क्या तुम सर्दी के इस मौसम में एक रात यमुना के ठंडे पानी में खड़े हो कर गुजार सकोगे? अगर तुम गुजार सकते हो तो हम तुमको सोने की 1000 मुहरें देंगे।"

अब 1000 मुहरें तो बहुत होती हैं। वह गरीब आदमी बेचारा उन 1000 मुहरों के लालच में आ गया और वह उस सर्दी की रात यमुना के पानी में गुजारने चला गया।

सर्दी बहुत थी पर 1000 सोने की मुहरें भी उसके लिये कम नहीं थीं। बादशाह के कुछ चौकीदार भी वहाँ खड़े थे, यह देखने के लिये कि वह वाकई उस ठंडे पानी में खड़ा रहा कि नहीं और उसने कोई धोखा तो नहीं किया।

अगले दिन वह आदमी अपना इनाम लेने के लिये बादशाह के दरबार में पहुँचा तो बादशाह ने उससे पूछा — "यह तो बताओ कि तुम इतने ठंडे पानी में सारी रात कैसे खड़े रहे?"

आदमी सीधे स्वभाव बोला — “सरकार, करीब **500** गज की दूरी पर एक लैम्प पोस्ट जल रहा था मैं उसी को देखता रहा। बस वही मेरी आशा थी।”

यह सुन कर बादशाह ने कहा कि वह आदमी इस इनाम के काबिल नहीं है क्योंकि वह आदमी यकीनन उस लैम्प पोस्ट से गर्मी ले रहा था इसलिये वह पूरी तरीके से उस ठंडी रात में ठंडे पानी में खड़ा नहीं रहा।

यह सुन कर वह गरीब आदमी बेचारा बहुत ही निराश हुआ कि वह बेचारा सारी रात तो उस सर्दी की रात में यमुना के ठंडे पानी में खड़ा रहा और फिर भी उसे इनाम नहीं मिला।

बीरबल भी यह सब सुन रहे थे। उनको बादशाह का यह तर्क बिल्कुल भी ठीक नहीं लगा कि पॉच सौ गज दूर से वह आदमी उस लैम्प पोस्ट से गर्मी ले रहा था। ऐसा भला वह कैसे कर सकता था।

उस समय तो उन्होंने कुछ कहना ठीक नहीं समझा पर उन्होंने सोच लिया कि वह राजा को इसका जवाब जरूर देंगे और उसको न्याय दिलवा कर ही रहेंगे।

अगले दिन बीरबल बहुत देर तक दरबार नहीं गये। अकबर ने उनका बहुत देर तक इन्तजार किया पर फिर भी जब बीरबल दरबार में नहीं आये तो उन्होंने अपने एक आदमी को उनके घर भेजा कि जाओ देख कर आओ कि बीरबल आज दरबार में क्यों नहीं आये।

नौकर ने वापस आ कर बादशाह को बताया कि बीरबल खिचड़ी पका रहे हैं। वह कहते हैं कि जब उनकी खिचड़ी पक जायेगी तब वह अपनी खिचड़ी खा कर ही दरबार में आयेंगे।

एक घंटा हुआ, दो घंटे हुए, तीन घंटे हुए पर बीरबल दरबार नहीं आये। लगता है कि बीरबल की खिचड़ी अभी तक नहीं पकी थी। यह ऐसी कैसी खिचड़ी थी बीरबल की कि पकने पर ही नहीं आ रही थी?

नौकर कई बार जा कर वापस आ चुका था पर बीरबल के आने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे सो इस बार बादशाह ने उन्हें खुद जा कर देखने का विचार किया।

बादशाह बीरबल के घर गये। बादशाह को अपने घर आया देख कर बीरबल बादशाह को लेने बाहर आये और उनको बड़े आदर से अन्दर ले गये।

बादशाह ने बताया कि क्योंकि बीरबल बहुत देर से दरबार में नहीं आये थे इसलिये वह खुद ही बीरबल को देखने के लिये चले आये थे कि क्या बात थी जो बीरबल को आने में इतनी देर लग रही थी।

बीरबल बोले — "सरकार, मैं अपनी खिचड़ी बना रहा था। जैसे ही मेरी खिचड़ी बन जायेगी मैं खिचड़ी खा कर तुरन्त ही दरबार में हाजिर होता हूँ।"

"क्या मैं तुम्हारी खिचड़ी देख सकता हूँ कहाँ है वह?"

"जरूर सरकार। क्यों नहीं।" कह कर बीरबल उनको वहाँ ले गये जहाँ उनकी खिचड़ी बन रही थी।

बादशाह को यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि खिचड़ी की हाँडी एक पेड़ की बड़ी ऊँची सी शाख पर लटक रही थी और नीचे जमीन पर दो चार लकड़ियों की सहायता से एक छोटी सी आग जल रही थी।

बादशाह इसको देख कर ज़ोर से हँस पड़े। उनसे पूछे बिना नहीं रहा गया — "बीरबल, इस तरह से तो यह तुम्हारी खिचड़ी ज़िन्दगी भर तक नहीं पकने की। इतनी दूर से और इतनी कम आग से खिचड़ी कैसे पकेगी? यह तुम्हें क्या हो गया है?"

बीरबल बोले — "सरकार, यह खिचड़ी पकेगी और यह खिचड़ी भी उसी तरह पकेगी जिस तरह से उस गरीब आदमी को 500 गज दूरी से लगे उस लैम्प पोस्ट से गर्मी मिल रही थी।"

बादशाह समझ गये कि उन्होंने उस गरीब आदमी को उसका इनाम न दे कर उसके साथ बड़ा अन्याय किया। बादशाह बीरबल का जवाब सुन कर उलटे पैरों दरबार वापस लौट गये और उस गरीब आदमी को दरबार में फिर से पेश करने का हुक्म दिया।

तुरन्त ही वह आदमी दरबार में लाया गया। बादशाह ने उसको उसका 1000 सोने के सिक्के का इनाम और 200 सोने के सिक्के और दे कर आदर सहित विदा किया।

इस तरह बीरबल ने उस गरीब आदमी को उसका इनाम दिलवाया।

आज भी जब किसी को किसी काम में असाधारण रूप से देरी होती है तो लोग कहते हैं "अरे, क्या कर रहे थे? क्या बीरबल की खिचड़ी पका रहे थे?"

सो इस कहावत को तभी इस्तेमाल करते हैं जब कोई आदमी किसी मामूली काम को करने में बहुत देर लगाता है या फिर उसी काम को ऐसे करता है कि वह कभी खत्म होने पर ही न आये।

8 तुम क्या राजा हरिश्चन्द्र हो

राजा हरिश्चन्द्र भारत के बहुत पुराने राजा हो गये हैं। जैसे राजा शिबि अपने दान के लिये मशहूर हैं उसी तरह से राजा हरिश्चन्द्र अपने सच बोलने के लिये बहुत मशहूर हैं। इसलिये इनको सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र भी कहा जाता है। सच बोलने का ये दूसरा नाम हैं।

उन्होंने अपने सच को कायम रखने के लिये बहुत दुख सहे। उनके सच बोलने की यह कहानी ही उनकी ज़िन्दगी की कहानी है इसलिये इस कहावत को समझाने के लिये हम उनकी ज़िन्दगी की यह कहानी यहॉ थोड़े में दे रहे हैं।

राजा हरिश्चन्द्र भगवान श्रीराम के पुरखे थे। इनके पिता का नाम राजा सत्यव्रत था जो बाद में त्रिशंकु के नाम से मशहूर हो गये थे।

राजा सत्यव्रत ने विश्वामित्र जी से इसी शरीर से स्वर्ग जाने की इच्छा प्रगट की। तो विश्वामित्र जी ने अपने तप के बल पर उनको इसी शरीर से स्वर्ग भेज दिया था पर देवताओं के राजा इन्द्र ने इसको नामुमकिन कह कर उनको नीचे धकेल दिया।

इधर विश्वामित्र जी उनको ऊपर भेजते रहे और उधर देवराज इन्द्र उनको नीछे धकेलते रहे सो वह आकाश में ही अटक गये। और इसी वजह से उनका नाम त्रिशंकु पड़ गया।

इन्हीं त्रिशंकु के बेटे थे राजा हरिश्चन्द्र। हरिश्चन्द्र की पत्नी का नाम था शैब्या और उनका एक बेटा था जिसका नाम था रोहिताश्व।[53]

एक बार वशिष्ठ जी और विश्वामित्र जी देवराज इन्द्र के दरबार में बैठे थे कि देवराज इन्द्र ने पूछा कि "क्या इस समय में कोई ऐसा है जो सत्य का पालन करता हो?"

वशिष्ठ जी बोले — "हाँ है और वह हैं राजा हरिश्चन्द्र।"

विश्वामित्र जी बोले — "नहीं वह नहीं हैं।"

बहस बढ़ती गयी तो तय यह पाया गया कि विश्वामित्र जी उनका इम्तिहान लें कि वशिष्ठ जी की यह बात सच है कि नहीं। सो राजा हरिश्चन्द्र का इम्तिहान शुरू हुआ।

एक बार राजा हरिश्चन्द्र को कोई यज्ञ करना था जिसमें उनको बहुत सारा सोना दान करना था। विश्वामित्र जी वह दान लेने के लिये राजा हरिश्चन्द्र के पास गये।

राजा हरिश्चन्द्र ने उनसे पूछा "आपको कितना सोना चाहिये?"

विश्वामित्र जी बोले — "जब कोई बहुत लम्बा आदमी किसी हाथी पर खड़ा हो कर एक कौड़ी फेंके मुझे सोने का उतना बड़ा ढेर चाहिये।"

राजा हरिश्चन्द्र बोले "दिया।"

---

[53] At some places Harishchandra's wife's name is given as "Taramatee" or "Chandramatee"

विश्वामित्र जी को राजा हरिश्चन्द्र से इस जवाब की आशा नहीं थी सो यह इनकी पहली हार थी। वह कुछ और नहीं सोच सके तो बोले — "अभी तुम इसको अपने खजाने में ही रहने दो। जब मुझे जरूरत होगी तब मैं तुमसे उसे आ कर उसे ले लूँगा।"

राजा हरिश्चन्द्र बोले — "जैसी आपकी इच्छा।"

इसके बाद विश्वामित्र जी ने बहुत सारे जंगली जानवर पैदा किये जिन्होंने राजा की राजधानी में बहुत शोर शराबा मचाया। सो राजा हरिश्चन्द्र अपनी पत्नी शैब्या और बेटे रोहित के साथ उनका शिकार करने गये।

राजा हरिश्चन्द्र ने जंगल में अपना कैम्प लगाया। विश्वामित्र जी ने उनके डेरे में दो सुन्दर लड़कियाँ भेजीं। उन्होंने राजा हरिश्चन्द्र से कुछ बदतमीजी की तो उन्होंने उनको पीट कर बाहर निकाल दिया।

इस पर विश्वामित्र जी ने उनसे कहा — "तुमने मेरी बेटियों की बेइज़्ज़ती की है तो या तो तुम इनसे शादी करो या फिर **48** दिन के अन्दर अन्दर मेरा सोना दो।"

राजा हरिश्चन्द्र उन लड़कियों से शादी नहीं करना चाहते थे सो उन्होंने उनको अपना सारा राज्य और खजाना देने का निश्चय किया। अपना सब कुछ दान करने के बाद वह बनारस चले गये।

लेकिन दान करने बाद तो ब्राह्मण को दक्षिणा भी दी जाती है और उन्होंने जब अपना सब कुछ दान कर दिया था तो वह अब दक्षिणा कहाँ से दें। विश्वामित्र जी अपनी दक्षिणा माँग रहे थे।

इसके लिये उन्होंने अपनी पत्नी और बेटे को एक सेठ के हाथों बेच दिया। जब इससे भी दक्षिणा का पैसा पूरा नहीं पड़ा तो उन्होंने अपने आपको एक डोम शूद्र के हाथों बेच दिया। और उससे आया सारा पैसा विश्वामित्र जी को दे दिया।

अब यह डोम विश्वामित्र जी का एक शिष्य नक्षत्रक था।[54] जाति का डोम होने की वजह से उसने राजा हरिश्चन्द्र को शमशान घाट का रखवाला बना दिया। वहाँ उनका काम लाश जलाने वालों से लाश जलाने का टैक्स इकट्ठा करना था।

एक दिन रोहित बाहर बागीचे में से पूजा के लिये फूल इकट्ठा करने गया। वहाँ उसको साँप ने काट लिया और वह मर गया। अब शैब्या क्या करे। उसके पास तो उसका शरीर ढकने के लिये कफ़न खरीदने के लिये भी पैसे नहीं थे।

सो वह रात को उसको ले कर शमशान घाट गयी। राजा हरिश्चन्द्र वहाँ के रखवाले थे तो उन्होंने देखा कि इतनी रात गये वहाँ कौन आया है। वह यह देख कर भौंचक्का रह गये कि एक स्त्री एक बच्चे का नंगा शरीर लिये वहाँ खड़ी है।

दोनों ने एक दूसरे को देखा। दोनों ही एक दूसरे को पहचान गये। राजा अपनी पत्नी को इस हालत में और बच्चे को मरा देख कर रो पड़े पर उन्होंने अपने मन के भाव अपनी पत्नी पर प्रगट नहीं होने दिये।

---

[54] At some places it is written that this Dome was Yam Raj himself.

राजा ने शमशान घाट के नियमों के अनुसार उसको बच्चे के शरीर को ढकने के लिये कहा पर शैब्या के पास तो कोई कपड़ा था नहीं सो उसने अपनी आधी साड़ी फाड़ी और उसमें बच्चे के शरीर को लपेट दिया।

अब राजा हरिश्चन्द्र ने उससे लाश जलाने का टैक्स माँगा। रानी ने रो रो कर कहा कि उसके पास बच्चे के शरीर को ढकने तक के लिये तो कपड़ा नहीं था फिर वह टैक्स कहाँ से दे। उसने राजा से दया की भीख माँगी पर राजा अपने फर्ज पर अड़े रहे।

तो शैब्या ने कहा — "मैंने अपनी आधी साड़ी तो इस बच्चे के शरीर को ढकने के लिये फाड़ ही दी है अब यह बची हुई आधी साड़ी तुम टैक्स में ले लो।" राजा हरिश्चन्द्र ने उसे टैक्स के रूप में स्वीकार कर लिया।

जैसे ही वह अपनी बची हुई आधी साड़ी उतारने लगी कि तभी भगवान विष्णु देवराज इन्द्र और विश्वामित्र जी के साथ वहाँ प्रगट हुए।

भगवान ने रोहित को ज़िन्दा कर दिया और उन सबको स्वर्ग चलने के लिये कहा तो राजा ने यह कह कर मना कर दिया कि उनकी जनता उनके बिना दुखी हो जायेगी इसलिये वे उनके साथ इस तरह से स्वर्ग नहीं जा सकते। हाँ अगर वह उनके साथ उनकी जनता को भी ले जायें तो ही वह वहाँ जाने के लिये तैयार हैं।

देवराज इन्द्र ने कहा — “राजन। हर आदमी के अपने अपने कर्म होते हैं उन्हीं के अनुसार वह स्वर्ग और नरक भोगता है इसलिये वे आपके साथ नहीं जा सकते।”

इस पर राजा हरिश्चन्द्र ने कहा — “तो मैं अपने सारे पुन्य अपनी जनता को देता हूँ और मैं नरक में जाने के लिये तैयार हूँ।”

देवराज इन्द्र यह सुन कर बहुत खुश हुए और वह अयोध्या के सारे लोगों को स्वर्ग ले गये। कहते हैं कि उन सबके जाने के बाद विश्वामित्र जी ने अयोध्या नये लोगों से बसायी।

तभी से यह कहावत चल निकली है कि “क्या तुम राजा हरिश्चन्द्र हो।” या “अच्छा तो तुम कलियुगी राजा हरिश्चन्द्र हो।” या फिर “छोड़ो छोड़ो एक राजा हरिश्चन्द्र थे और एक तुम हो।” आदि आदि वाक्यों से किसी सच बोलने वाले का स्वागत किया जाता है।

ऐसा समझा जाता है कि सच बोलने में हरिश्चन्द्र का कोई मुकाबला नहीं कर सकता था।

9 द्रौपदी का चीर

यह कहावत भी भारत देश में कही सुनी जाती है। इसे हिन्दू धर्म के एक बहुत बड़े महाकाव्य महाभारत से लिया गया है। "द्रौपदी का चीर" कहावत का मतलब है कि "द्रौपदी का कपड़ा" या फिर "जिसका कोई अन्त ही न हो।"

यह सोच कर तो तुम आश्चर्य में पड़ गये होगे कि ऐसा कैसे हो सकता है। कोई चीज़ ऐसी कैसे हो सकती है जिसका अन्त ही न हो। हर चीज़ का कहीं न कहीं अन्त तो जरूर ही होता है चाहे वह पहले हो या बाद में, जल्दी हो या देर में।

इसी लिये यह कहावत बनी है क्योंकि इसमें द्रौपदी के चीर का कोई अन्त ही नहीं था। महाभारत में द्रौपदी पांडवों की पत्नी का नाम था और चीर माने कपड़ा – सो द्रौपदी के कपड़े का कोई अन्त नहीं था। तो इसकी कहानी पढ़ो कि ऐसा कैसे हुआ।

महाभारत दो सौतेले भाइयों के परिवारों की कहानी है। इन दोनों सौतेले भाइयों के नाम हैं धृतराष्ट्र और पांडु। शुरू शुरू में राजा शान्तनु हस्तिनापुर के राजा थे। उनके तीन बेटे थे – भीष्म, चित्रांगद और विचित्रवीर्य।

भीष्म ने राजगद्दी पर बैठने से मना कर दिया और उन्होंने शादी भी नहीं की। चित्रांगद राजगद्दी पर बैठने के कुछ दिनों बाद ही एक

लड़ाई में मारे गये। सो आखीर में विचित्रवीर्य को राजा बना दिया गया।

विचित्रवीर्य की दो रानियाँ थी। दोनों के एक एक बेटा था – बड़ी रानी से अन्धा धृतराष्ट्र और छोटी रानी से पांडु। इनमें धृतराष्ट्र बड़े थे और पांडु छोटे थे। हालाँकि बड़े होने के नाते धृतराष्ट्र को राजा होना चाहिये था पर क्योंकि धृतराष्ट्र जन्म से अन्धे थे इसलिये पांडु को राजा बना दिया गया।

धृतराष्ट्र ने पांडु को बाहर से तो राजा स्वीकार कर लिया पर मन ही मन वह उसको राजा स्वीकार नहीं कर सके। वह हमेशा यही सोचते रहते कि अगर वह अन्धे न होते तो आज वही राजा होते।

अब इसमें वह कुछ कर तो नहीं सकते थे सो अब वह अपने बच्चों के आने का इन्तजार करने लगे। उनको यह पूरी उम्मीद थी कि उनके बच्चे पांडु के बच्चों से बड़े होंगे।

क्योंकि वह खुद भी पांडु से बड़े थे और उनकी शादी भी उनसे पहले हुई थी सो अगर उनके पांडु से पहले बेटा हो जाये तो कम से कम उनका बेटा ही राजा बन जायेगा।

समय आने पर धृतराष्ट्र के सौ और पांडु के पाँच बेटे हुए। धृतराष्ट्र के सौ बेटे कौरव कहलाये और पांडु के पाँच बेटे पांडव कहलाये।

पर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। पांडु के एक भी नहीं दो दो बेटे धृतराष्ट्र के सबसे बड़े बेटे दुर्योधन से बड़े थे – युधिष्ठिर

और भीम। फिर भी धृतराष्ट्र खुद को और अपने सबसे बड़े बेटे दुर्योधन को यह कह कर बड़ा करते रहे कि क्योंकि वह कुरु परिवार के सबसे बड़े बेटे का सबसे बड़ा बेटा है इसलिये यह राज्य उसी का है।

यह बीज दुर्योधन के दिमाग में इतना गहरा और मजबूती से बैठा दिया गया कि वह किसी और को हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठा सोच भी नहीं सकता था। इत्तफाक की बात कि राजा पांडु जल्दी ही मर गये और उनकी पत्नी अपने पाँच बेटों को ले कर हस्तिनापुर आ गयी।

पांडवों को हस्तिनापुर में देख कर दुर्योधन के मन में युधिष्ठिर के लिये इतनी ज़्यादा जलन पैदा हो गयी कि वह पांडु के पाँचों बेटों को ही जान से मारने की योजनाऐं बनाने लगा।

उसने कई बार कोशिश भी की पर कुछ तो पांडवों की किस्मत अच्छी थी और कुछ वे सावधान थे सो वे बचते रहे। बच्चे बड़े होते जा रहे थे।

अब हस्तिनापुर का युवराज[55] घोषित करने का समय आ गया था तो सबका कहना था कि क्योंकि पांडु राजा थे इसलिये उनके मरने के बाद उनके सबसे बड़े बेटे युधिष्ठिर को ही युवराज घोषित करना चाहिये पर धृतराष्ट्र और उनका बेटा दुर्योधन इसके लिये कतई तैयार नहीं थे।

[55] Crown King

फिर भी सबकी राय के अनुसार पांडु के सबसे बड़े बेटे युधिष्ठिर को ही युवराज घोषित कर दिया गया।

इस बीच पांडवों की शादी द्रौपदी से हो गयी। अब दुर्योधन ने साफ साफ अपने पिता धृतराष्ट्र से कह दिया — "जैसे एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं पिता जी उसी तरह से एक राज्य में दो राजा नहीं रह सकते। हस्तिनापुर मेरा है मैं उसका राजा हूँ।

अगर आपको युधिष्ठिर को राज्य देना ही है तो हस्तिनापुर का बँटवारा कर दो। और अगर आपने ऐसा नहीं किया तो मैं जान दे दूँगा।"

धृतराष्ट्र दुर्योधन को बहुत प्यार करते थे। उसकी जान देने की बात तो वह सोच भी नहीं सकते थे सो हस्तिनापुर का बँटवारा हो गया। दुर्योधन हस्तिनापुर का राजा हो गया और पांडवों को खांडवप्रस्थ दे दिया गया।

खांडवप्रस्थ एक उजाड़ जगह थी। पांडवों ने मेहनत कर के उसको स्वर्ग बना लिया और उसका नाम इन्द्रप्रस्थ रख दिया। अपने आस पास के देशों को जीत कर उन्होंने अपनी सम्पत्ति भी खूब बढ़ा ली और फिर श्रीकृष्ण की सलाह पर उन्होंने वहाँ राजसूय यज्ञ किया।

इस यज्ञ में बहुत सारे राजाओं और सब रिश्तेदारों को बुलाया गया। हस्तिनापुर से सभी लोग गये। पहले तो दुर्योधन को युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ करना ही अच्छा नहीं लग रहा था पर

वहॉ जा कर जब उसने युधिष्ठिर की सम्पत्ति, महल और शान शौकत देखे तो उसकी जलन तो और कई गुना बढ़ गयी।

पर इस यज्ञ में एक और बुरी घटना घट गयी। मय नाम के दानव ने तीसरे पांडव अर्जुन के लिये अपनी जान बचाने के लिये अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये युधिष्ठिर के लिये एक राज सभा बनायी।

यह राज सभा बहुत ही विचित्र थी। इसमें जहॉ पानी था वहॉ की जमीन सूखी दिखायी देती थी और जहॉ दरवाजा था वहॉ दीवार दिखायी देती थी।

जब यज्ञ समाप्त हो गया और सब लोग जाने लगे तो युधिष्ठिर ने दुर्योधन को कुछ और समय के लिये रोक लिया और उसको अपनी राज सभा देखने के लिये कहा।

दुर्योधन रुक गया और युधिष्ठिर की राज सभा देखने चला गया। वह वहॉ अकेला ही घूम रहा था कि एक जगह उसको लगा कि वहॉ पानी है सो उसने अपने कपड़े ऊपर कर लिये ताकि वे भीग न जायें। पर जब उसको पता चला कि वहॉ तो सूखी जमीन थी तो वह बहुत शर्मिन्दा हुआ।

इसी तरह से एक जगह उसको लगा कि वहॉ तो सूखी जमीन है तो वह वहॉ से ऐसे ही जा रहा था कि वह पानी में गिर पड़ा और उसके सारे कपड़े गीले हो गये।

इत्तफाक से द्रौपदी बाहर छज्जे पर खड़ी थी। यह देख कर वह बहुत ज़ोर से हँस पड़ी और बोली — "अन्धे का बेटा तो अन्धा ही होता है।" यह सुन कर दुर्योधन के तन बदन में आग लग गयी। उसके बाद इन्द्रप्रस्थ से वह चला तो आया पर इस बेइज़्ज़ती की आग में बराबर जलता रहा।

कुछ दिनों बाद उसने अपने मामा शकुनि की सहायता से पांडवों को नीचा दिखाने की एक तरकीब सोची। उसके शकुनि मामा जुए का पाँसा बहुत अच्छा फेंकते थे सो उसने युधिष्ठिर को जुआ खेलने का न्यौता भेजा।

उन दिनों क्षत्रिय लोग साधारणतया जुआ खेलने को मना नहीं करते थे सो युधिष्ठिर को उसका यह न्यौता स्वीकार करना पड़ा।

इन्द्रप्रस्थ से पाँचों पांडव, द्रौपदी और पांडवों की माँ कुन्ती सब हस्तिनापुर आये। जहाँ जुआ खेला जाने वाला था वहाँ परिवार के सभी बड़े और गुरू लोग बैठे हुए थे।

जुए का खेल शुरू हुआ। दुर्योधन ने चालाकी से युधिष्ठिर को इस बात पर राजी कर लिया कि उसकी तरफ से उसका पाँसा उसके मामा ही फेंकेंगे।

अब क्योंकि शकुनि पाँसा बहुत अच्छा फेंकता था सो सारे दाँव दुर्योधन जीतता चला गया। इन सारे दाँवों में उसने युधिष्ठिर का

सारा धन, सारी सम्पत्ति, उनका राज्य, नौकर चाकर, उनके चारों भाई यहाँ तक कि उनको खुद को भी जीत लिया।

आखीर में युधिष्ठिर बोले — "अब तो मेरे पास दाँव पर लगाने के लिये कुछ भी नहीं है।"

पर दुर्योधन का उद्देश्य तो अभी पूरा नहीं हुआ था सो वह तुरन्त बोला — "अभी तो वह द्रौपदी बची है।"

युधिष्ठिर ने एक बार सोचा और फिर उसको भी दाँव पर लगा दिया। वह यह दाँव भी हार गये और इस तरह से अब द्रौपदी भी दुर्योधन की हो गयी।

दुर्योधन ने द्रौपदी को राजभवन से जुआ खेलने वाली जगह बुलवाया। द्रौपदी ने मना किया तो दुर्योधन का छोटा भाई दुशासन उसको बालों से पकड़ कर खींचता हुआ वहाँ ले आया। दुर्योधन ने उसको आज्ञा दी कि वह उस भरी सभा में द्रौपदी के सारे कपड़े उतार दे।

यह सुन कर वहाँ बैठे सभी लोग सन्न रह गये। परिवार की बहू के भरी सभा में कपड़े उतरवाये जा रहे थे। सबने दुर्योधन को बहुत समझाया पर वह कहाँ मानने वाला था। अपमान की आग उसके सीने में जल रही थी।

वह अपनी पर अड़ा रहा और दुशासन ने उसकी साड़ी खींचनी शुरू की।

द्रौपदी बेचारी क्या करे। उसकी तो इज़्ज़त मिट्टी में मिल रही थी। उसने वहाँ बैठे सब लोगों से प्रार्थना की पर कोई उसकी सहायता नहीं कर पा रहा था। तब उसने भगवान श्रीकृष्ण को अपनी सहायता के लिये पुकारा। श्रीकृष्ण उसकी सहायता के लिये तुरन्त दौड़े आये।

सोचो बच्चो, उन्होंने द्रौपदी की सहायता कैसे की? उन्होंने द्रौपदी की साड़ी की लम्बाई बढ़ा दी।

दुशासन में 10 हजार हाथियों का बल था। उसने द्रौपदी की साड़ी जल्दी जल्दी खींचनी शुरू कर दी। वह उसकी साड़ी खींचता रहा खींचता रहा, द्रौपदी कृष्ण को पुकारती रही पुकारती रही और श्रीकृष्ण उसकी साड़ी की लम्बाई बढ़ाते रहे बढ़ाते रहे।

द्रौपदी की साड़ी इतनी लम्बी हो गयी कि दुशासन जैसा ताकतवर आदमी भी उसको खींचते खींचते थक गया। जमीन पर द्रौपदी की साड़ी के कपड़े का ढेर लग गया पर उसकी साड़ी के ओर छोर का कहीं पता न था।

दुशासन द्रौपदी की साड़ी खींचे जा रहा था खींचे जा रहा था और उसकी साड़ी जमीन पर इकट्ठा होती जा रही थी इकट्ठा होती जा रही थी। वह तो खत्म होने पर ही नहीं आ रही थी।

सबके लिये यह एक तमाशा बन गया। सब आश्चर्यचकित थे पर खुश थे कि दुर्योधन अपने बुरे इरादों में नाकामयाब रहा।

साड़ी खींचने का यह सिलसिला काफी देर तक चलता रहा। आखिर दुशासन जैसा ताकतवर आदमी भी थक गया और थक कर बैठ गया। द्रौपदी की इज़्ज़त बच गयी, दुर्योधन के बुरे इरादे नाकामयाब रहे, और वहाँ बैठे सब लोगों ने राहत की साँस ली।

तभी से यह कहावत मशहूर हो गयी – "द्रौपदी का चीर"। जब भी कोई चीज़ बहुत लम्बी हो जाती है और ऐसा लगता है कि उसका कोई अन्त ही नजर नहीं आ रहा है तब लोग कहते हैं "अरे तुम्हारा तो यह काम ही खत्म नहीं हो रहा। यह तो द्रौपदी का चीर हो गया।"

जैसे कोई कहानी बहुत लम्बी हो जाये या फिर कोई रास्ता बहुत लम्बा हो जाये आदि आदि। वहाँ यह कहावत इस्तेमाल की जाती है।

10 लक्ष्मण रेखा

बच्चों तुम लोग सोच रहे होगे कि यह लक्ष्मण रेखा क्या होती है। यह भी एक कहावत है जो भारत के महाकाव्य आदिकाव्य वाल्मीकि रामायण से ली गयी है।

वाल्मीक रामायण संस्कृत का पहला काव्य है जिसे वाल्मीकि जी ने लिखा था इसी लिये रामायण आदिकाव्य और वाल्मीकि जी आदिकवि कहलाते हैं।

उत्तर भारत में तुलसी दास जी की लिखी हुई रामचरित मानस घर घर में पढ़ी जाती है। पर यह प्रसंग क्योंकि रामचरित मानस में नहीं है वाल्मीकि रामायण में है इसलिये यह कहावत वहीं से आयी है।

यह तो तुम सब लोग जानते ही हो कि रामायण भगवान श्रीराम और राक्षसराज रावण की कहानी है।

भगवान श्रीराम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न अयोध्या के राजा दशरथ के बेटे थे। चारों की शादी के बाद राजा दशरथ ने देखा कि उनकी प्रजा श्रीराम को बहुत प्यार करती है तो उन्होंने उनको युवराज घोषित करने का निश्चय किया।

अपने कुलगुरू वशिष्ठ जी से सलाह कर के उनसे इस शुभ काम के लिये दिन सुधवाया और फिर उस दिन के लिये बहुत ज़ोर शोर से तैयारियॉ होने लगीं।

इत्तफाक की बात कि यह बात उनकी दूसरी रानी कैकेयी और उनके बेटे भरत और सबसे छोटी रानी सुमित्रा के बेटे शत्रुघ्न को नहीं बतायी गयी। भरत और शत्रुघ्न उस समय अपनी नानी के घर गये हुए थे।

कैकेयी को यह खबर उसकी प्रिय दासी मन्थरा ने दी कि श्रीराम युवराज होने वाले हैं तो वह बहुत खुश हुई। इस पर मन्थरा ने कैकेयी को बहुत समझाया कि यह तो तुम्हारे नुकसान में है और तुम खुश हो रही हो।

अच्छा तो यह होगा कि इस समय तुम अपने वे दो वर माँग लो जिनको राजा ने तुमको युद्धभूमि में देने का वायदा किया था पर उन्होंने वे अभी तक तुम्हें दिये नहीं हैं।

पहले वर में तुम भरत के लिये राजगद्दी माँग लो और दूसरे वर में श्रीराम को चौदह साल तपस्वी के वेश में वनवास माँग लो। इससे तुम रानी बन जाओगी और रास्ते का काँटा भी हट जायेगा।

कैकेयी की बात समझ में आ गयी। उसने राजा से यही दो वर माँग लिये। राजा ने उसको बहुत समझाया कि यह कोई वर माँगने का समय नहीं है इस समय तो तुम श्रीराम के राजतिलक की खुशियाँ मनाओ।

दूसरी बात यह कि भरत का राजतिलक तो मैं अभी कर देता हूँ पर इसमें राम को वनवास भेजने की क्या जरूरत है। तीसरी बात

राम को वनवास भेजने से न तो मैं ज़िन्दा बचूँगा और न भरत। तुम अपने पति और बेटे के प्राण लेने पर क्यों तुली हो।

पर कैकेयी के दिमाग में तो कुछ और था ही नहीं सो वह नहीं मानी। श्रीराम को वनवास हो गया। साथ में सीता जी और लक्ष्मण जी भी उनके साथ चले गये।

श्रीराम से अलग न रहने की वजह से राजा दशरथ स्वर्ग चले गये। राज सिंहासन खाली हो गया तो भरत और शत्रुघ्न को उनकी नानी के घर से बुलवाया गया

वशिष्ठ जी ने जब भरत से कहा कि आपके पिता अयोध्या का राज आपको दे गये हैं तो भरत ने साफ मना कर दिया कि यह राज्य उनका था ही नहीं। यह तो उनके बड़े भाई श्रीराम का है और वही इसके राजा रहेंगें।

इस बात को साबित करने के लिये वे राम को बुलाने के लिये वन गये पर श्रीराम ने यह कहते हुए अयोध्या लौटने से मना कर दिया कि पिता के मरने के बाद अब उनका कहा झूठ नहीं हो सकता। भरत के बहुत जिद करने पर उन्होंने अपनी चरण पादुका दे कर उनको अयोध्या के लिये विदा किया।

भरत ने अयोध्या आ कर भी राजगद्दी नहीं सँभाली। वह महल में भी नहीं रहे। वह नन्दी ग्राम में रहते थे और सिंहासन पर श्रीराम की पादुका रख कर उनकी आज्ञा ले कर राज काज करते थे।

उधर श्रीराम सीता जी और लक्ष्मण जी के साथ जंगल जंगल भटकते रहे। एक बार वह पंचवटी में ठहरे हुए थे कि रावण की बहिन शूर्पणखा उधर आ निकली। तीनों को देख कर वह मोहित सी हो गयी और उसने श्रीराम से शादी की इच्छा प्रगट की।

श्रीराम ने सीता की तरफ इशारा करते हुए कहा कि मैं तो शादी शुदा हूँ मेरा छोटा भाई कुँआरा है तुम उससे पूछ कर देख लो अगर वह तुमसे शादी कर ले तो। लक्ष्मण जी ने कहा मैं तो श्रीराम का दास हूँ सो मैं कोई काम करने के लिये आजाद नहीं हूँ। मैं शादी नहीं कर सकता।

इस पर शूर्पणखा ने सोचा कि यह सुन्दर स्त्री ही मेरी शादी में बाधा है सो वह सीता जी को काटने दौड़ी तो श्रीराम के इशारे पर लक्ष्मण जी ने उसके नाक कान काट लिये।

वह अपने कटे नाक कान ले कर अपने दो भाइयों खर और दूषण के पास गयी तो वे श्रीराम से लड़ने आये। श्रीराम ने उन दोनों को मार दिया।

तब वह अपने भाई रावण के पास पहुँची और उसको जा कर पंचवटी के सारे हाल बताये। साथ में उसने उससे यह भी कहा कि उनके साथ एक बहुत सुन्दर स्त्री भी है जो तुम्हारे रनिवास में होनी चाहिये।

रावण ने सुन कर सोचा कि यह राम तो लगता है कि कोई बड़ी ऊँची चीज़ है। खर और दूषण तो मेरे बराबर ही ताकतवर हैं उसने

जब उनको मार दिया तो यह तो लड़ने के काबिल आदमी है। इससे तो लड़ना ही चाहिये। मगर कैसे?

सोचते सोचते रावण को एक तरकीब सूझी वह तुरन्त अपने मामा मारीच के पास गया और उससे सोने का मोहक हिरन बन कर श्रीराम की कुटिया के आसपास घूमने के लिये कहा ताकि सीता जी उसे देख लें और श्रीराम से उसे मार कर लाने के लिये कहें।

जब श्रीराम उसे मारने जायेंगे तो वह उनको दूर भगा ले जायेगा और जब वह उसको तीर मारेंगे तब वह श्रीराम की आवाज में "हा लक्ष्मण हा सीते" कह कर चिल्लायेगा।

वह आवाज सुन कर सीता जी लक्ष्मण को राम की सहायता के लिये भेजेंगीं। इस बीच सीता जी कुटिया में अकेली रह जायेंगीं तो रावण एक साधु का रूप रख कर वहाँ जायेगा और उनको हर कर लंका ले आयेगा। श्रीराम उसको लेने के लिये लंका आयेंगे और इस तरह वह उनसे लड़ सकेगा।

अब इस युद्ध में अगर उसने श्रीराम को मार दिया तो सीता जी उसकी हो जायेंगीं और अगर यह वही श्रीराम हैं जो वह सोच रहा है उन्होंने उसको मार दिया तो वह स्वर्ग चला जायेगा।

मारीच ने रावण को बहुत समझाया कि वह ऐसा न करे पर वह नहीं माना और उसको जान से मारने की धमकी दी। मारीच ने सोचा कि रावण के हाथ की बजाय तो श्रीराम के हाथ से मरना ज़्यादा

अच्छा है। और वह सोने का मोहक हिरन बन कर श्रीराम के कुटिया के आसपास घूमने लगा।

रावण ने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ। सीता जी ने सोने का मोहक हिरन देखा और श्रीराम से उसको ज़िन्दा या मार कर लाने के लिये कहा। श्रीराम ने अपना धनुष वाण उठाया और हिरन के पीछे चल दिये। हिरन भी श्रीराम को देख कर भाग लिया।

कुछ ही देर में हिरन ऑखों से ओझल हो गया। काफी दूर पहुँच कर श्रीराम ने हिरन को वाण मारा। हिरन ने मरने से पहले अपना असली रूप दिखाया और श्रीराम की दुखी आवाज में ज़ोर से "हा लक्ष्मण हा सीते" चिल्ला कर मर गया।

श्रीराम उसकी आवाज सुन कर तुरन्त समझ गये कि अब आगे क्या होने वाला है सो वह तेज़ तेज़ कदमों से डरे हुए से अपनी कुटिया की तरफ चल दिये।

इधर जैसे ही सीता जी ने मारीच की श्रीराम की आवाज में "हा लक्ष्मण हा सीते" सुना तो वह बेचैन हो गयीं। उन्होंने तुरन्त ही लक्ष्मण से कहा कि उनके भाई किसी मुसीबत में फॅस गये हैं उनको तुरन्त ही अपने भाई की सहायता के लिये जाना चाहिये।

लक्ष्मण जी ने उनके बहुत समझाया कि भैया तो सारे संसार की रक्षा करते हैं वह किस मुसीबत में फॅस सकते हैं। आप बिल्कुल चिन्ता न करें पर सीता जी नहीं मानी और उनको बुरा भला कह कर जाने पर मजबूर कर दिया।

जब सीता जी नहीं मानी तो वह बोले — "भैया मुझे आपकी सुरक्षा के लिये यहाँ छोड़ कर गये थे और अब आप मुझे भैया की रक्षा के लिये भेज रही हैं भगवान आपकी सहायता करे।"

कह कर उन्होंने कुटिया के चारों तरफ अपने धनुष की नोक से एक रेखा खींची और उनसे कहा — "माता आपके कहने से मैं जा तो रहा हूँ पर इस जंगल में राक्षस बहुत रहते हैं। आप इस रेखा के अन्दर ही रहियेगा इसके बाहर मत जाइयेगा तो आप सुरक्षित रहेंगीं।" और वह उन्हें प्रणाम कर के चले गये।

बाद में रावण वहाँ एक साधु के वेश में आया और उसने सीता जी को उस रेखा के बाहर आने के लिये मजबूर किया। जैसे ही उन्होंने वह रेखा पार की रावण उनको हर कर ले भागा।

उस दिन से वह रेखा लक्ष्मण रेखा के नाम से मशहूर हो गयी। यह है लक्ष्मण रेखा की कहानी।

इस लक्ष्मण रेखा के कई अर्थ हैं। इसका एक अर्थ तो यह है कि स्त्रियों को अपने धर्म के अनुसार अपने दायरे में रहना चाहिये। अगर वे ऐसा नहीं करती हैं तो जैसा सीता जी के साथ हुआ वैसा ही उनके साथ भी हो सकता है। उनको भी कोई रावण पकड़ कर ले जा सकता है और फिर उनके प्रियजन मुसीबत में फँस सकते हैं।

इसके अलावा उनको अपने घर के पुरुषों का कहा मानना चाहिये नहीं तो वे खुद को तो मुसीबत में डाल ही लेती हैं साथ में दूसरों के लिये भी मुसीबत खड़ी कर देती हैं।

इसी लिये कहते हैं कि लक्ष्मण रेखा पार करने का नतीजा खराब ही होता है। लक्ष्मण रेखा कभी पार नहीं करनी चाहिये। यह कहावत अंग्रेजी की "ऐडम्स ऐपिल" कहावत से बहुत मिलती जुलती है जिसमें ऐडम ने भगवान के कहने के बावजूद उस पेड़ का फल खा लिया था जिसको उसे खाना मना था और ऐसा कर के उसने सारी मानव जाति को मुसीबत में डाल दिया वरना हम भी आज अमर होते।

11 तुम तो हनुमान जी हो गये

यह कहावत भी हिन्दू धर्म के महाकाव्य रामायण से निकली है। बच्चों यह तो तुमको मालूम ही है कि रामायण भगवान श्रीराम और राक्षसराज रावण की कहानी है पर इसमें हनुमान जी के भी कई बहुत बड़े काम है।

हनुमान जी पवन देव और अंजनी जी के बेटे हैं और शिव जी के अवतार हैं। उन्होंने जन्म ही श्रीराम की सेवा के लिये लिया था।

श्रीराम से वह पहली बार तब मिले थे जब राक्षसराज रावण ने सीता जी का हरण कर लिया था और श्रीराम जंगल में सीता को ढूँढते घूम रहे थे।

रावण ने सीता को हरने के लिये अपने मामा मारीच को इस्तेमाल किया था। उसको उसने सोने का हिरन बन कर श्री राम की कुटिया के आस पास घूमने के लिये कहा।

रावण सोचता था कि सोने का हिरन देख कर सीता जी श्रीराम को उसको लाने के लिये भेजेंगी। श्रीराम उसको सीता जी के लिये लेने जायेंगे।

मारीच उनको उनकी कुटिया से बहुत दूर ले जायेगा और फिर वह वहीं से श्रीराम की आवाज में चिल्ला कर सीता जी और लक्ष्मण को अपनी सहायता के लिये बुला लेगा। इस तरह सीता जी अकेली रह जायेंगी और इस बीच वह उनको हर ले जायेगा।

ऐसा ही हुआ। सीता जी ने जब सोने का हिरन देखा तो श्रीराम से प्रार्थना की कि वह सोने का हिरन पकड़ कर उनके लिये ला दें। सो श्रीराम को उसको लाने जाना पड़ा।

जैसे ही श्रीराम ने हिरन मारा मारीच श्रीराम की आवाज में चिल्लाया "हा लक्ष्मण हा सीते"। यह सुन कर सीता जी ने लक्ष्मण जी को श्रीराम की सहायता के लिये भेजा। लक्ष्मण जी चले गये।

उधर श्रीराम जब मारीच रूपी हिरन को मार कर वापस आ रहे थे तो आते समय रास्ते में उनको लक्ष्मण जी उनकी सहायता के लिये जाते हुए मिले तो श्रीराम समझ गये कि अब सीता जी का अपनी कुटिया में मिलना बहुत मुश्किल है। और यह सच था।

वे दोनों जब अपनी कुटिया में आये तो सीता जी वहाँ नहीं थीं और उनका तो आस पास में भी कहीं पता नहीं था। श्रीराम बहुत दुखी हुए और दोनों भाई सीता जी को ढूँढने निकले। तभी रास्ते में उनको हनुमान जी मिले। उस समय हनुमान जी वानरराज सुग्रीव के मन्त्री और सहायक थे।

सुग्रीव के बड़े भाई बालि किष्किन्धा नगरी के राजा थे। एक बार बालि एक राक्षस को मारने गये तो वहाँ उसको मारने में उनको थोड़ी देर लग गयी।

किष्किन्धा का राज सिंहासन खाली पड़ा था। सिंहासन को बहुत दिनों तक खाली नहीं रखा जा सकता था तो बालि के मन्त्रियों ने सुग्रीव को राजा बना दिया।

जब बालि उस राक्षस को मार कर वापस लौटे तो सुग्रीव को राजा बना देख कर बहुत नाराज हुए और उनको अपने राज्य से बाहर निकाल दिया। सुग्रीव अपने चार मन्त्रियों को ले कर ऋष्यमूक पर्वत पर रहने के लिये चले गये। इन चार मन्त्रियों में एक हनुमान जी थे।

जबसे सुग्रीव यहाँ रहने आये थे वह बालि से बहुत डरते थे क्योंकि बालि ने उनको मारने की धमकी दे रखी थी।

एक दिन सुग्रीव ने श्रीराम लक्ष्मण को अपने पर्वत की तरफ आते देखा तो हनुमान जी को यह देखने के लिये भेजा कि वे कहीं बालि के भेजे हुए आदमी तो नहीं थे।

सो हनुमान जी एक ब्राह्मण का वेश रख कर श्रीराम के पास गये और उनसे पूछा कि वे कौन थे और वहाँ क्या कर रहे थे।

श्रीराम ने उनको अपनी कहानी बतायी तो हनुमान जी ने उनको अपना प्रभु पहचान कर प्रणाम किया और उनको अपने कन्धे पर बिठा कर सुग्रीव के पास ले गये।

उनको वहाँ ला कर उन्होंने उन दोनों की दोस्ती करवायी। दोस्ती में श्रीराम ने बालि को मार कर सुग्रीव को राजा बनाने का वायदा किया और सुग्रीव ने सीता जी के ढूँढने और उनको वापस लाने में श्रीराम की सहायता करने का वायदा किया।

श्रीराम ने बालि को मार कर सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा बना दिया और सुग्रीव ने अपने वानर भेज कर सीता जी का पता लगवाया।

यह पता लगने के बाद कि सीता जी राक्षसराज रावण की लंका में थीं श्रीराम ने सुग्रीव की सहायता से रावण पर चढ़ाई कर दी। यह युद्ध कई दिनों तक चला।

इसी युद्ध के बीच एक बार रावण के बेटे मेघनाद ने लक्ष्मण जी को एक हथियार "शक्ति" मारा जिससे लक्ष्मण जी बेहोश हो गये। लक्ष्मण जी को इस हालत में देख कर श्रीराम बहुत रोये।

तब हनुमान जी लंका से सुषेण नाम के वैद्य को ले कर आये। वैद्य सुषेण ने बताया कि अगर सुबह होने से पहले पहले संजीवनी बूटी न मिली तो लक्ष्मण जी का बचना बहुत मुश्किल है। और यह संजीवनी बूटी हिमालय की द्रोण नाम की चोटी पर है।

अब हिमालय तक जाना और वहाँ से वह बूटी ढूँढ कर सुबह से पहले पहले ले कर आना, यह काम हनुमान जी के सिवा और कोई नहीं कर सकता था। वह पवनपुत्र थे न।

बूटी की पहचान जानने के लिये जब हनुमान जी ने वैद्य सुषेण से पूछा कि मैं उस बूटी को पहचानूँगा कैसे तो उन्होंने कहा — "तुम को उसे पहचानने में कोई परेशानी नहीं होगी क्योंकि वह बूटी रात में चमकती है।" सो हनुमान जी बूटी लाने चल दिये।

उधर लंका में रावण को पता चला कि हनुमान जी लक्ष्मण जी को ज़िन्दा करने के लिये संजीवनी बूटी लाने के लिये हिमालय जा रहे हैं तो उसने अपनी ताकत से उस संजीवनी बूटी के आस पास के सारे पौधे चमका दिये।

उसने सोचा कि इस तरह से वह हनुमान जी को बूटी पहचानने से रोक लेगा और लक्ष्मण जी ज़िन्दा नहीं हो पायेंगे। और क्योंकि श्रीराम लक्ष्मण जी को बहुत प्यार करते थे तो लक्ष्मण जी के ज़िन्दा न होने पर वह अपने आप ही मर जायेंगे और फिर वह अमर हो जायेगा।

हनुमान जी जब उस पहाड़ पर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ तो सारा का सारा पहाड़ ही जगमगा रहा था।अब वह उसमें संजीवनी बूटी कैसे पहचाने कैसे ढूँढें। हर पौधा तो वहाँ संजीवनी बूटी की तरह ही चमक रहा था।

समय गुजरता जा रहा था। हनुमान जी समझ ही नहीं पा रहे थे कि वह उन सब चमकती बूटियों में से संजीवनी बूटी कैसे ढूँढें। उन्होंने सोचा कि गलत बूटी ले जाने से तो कोई फायदा नहीं है और ठीक बूटी मैं पहचान नहीं पा रहा हूँ तो मैं यह सारा का सारा पहाड़ ही ले चलता हूँ।

बस उन्होंने वह पूरा का पूरा पहाड़ ही उखाड़ लिया और उसको उठा कर ले चले। सुबह होने से पहले ही वह सुषेण वैद्य के पास पहुँच गये।

सुषेण वैद्य ने उन बूटियों में से संजीवनी बूटी पहचान ली और उसका रस निकाल कर लक्ष्मण जी के गले में डाला तो कुछ ही देर में लक्ष्मण जी को होश आ गया। सभी लोग बहुत खुश हो गये। श्रीराम ने हनुमान जी को गले लगा लिया।

अब क्योंकि हनुमान जी तो केवल एक छोटी सी बूटी ही लाने गये थे और वह तो समूचा पहाड़ का पहाड़ ही उठा लाये तो यह कहावत तभी से प्रचलित हो गयी।

जब किसी से कोई बहुत ही छोटी सी चीज़ लाने को कहा जाये और वह बहुत बड़ी चीज़ उठा लाये तब यह कहावत इस्तेमाल की जाती है कि "अरे तुम तो हनुमान जी हो गये।"

इसका मतलब "तुमसे तो ज़रा सी चीज़ मॅगवायी थी और तुम तो हनुमान जी की तरह से सारा का सारा ही उठा लाये।"

जैसे अगर तुम किसी से सुई मॅगवाओ और वह सुइयों से भरा पूरा का पूरा बक्सा ही उठा कर ले आये और कहे कि "मुझे तो पता नहीं कि आपको कौन सी सुई चाहिये आप अपने आप ही निकाल लें।"

तो यहाँ यह कहावत इस्तेमाल की जा सकती है "तुम से तो ज़रा सी सुई मॅगवायी थी और तुम तो पूरा का पूरा बक्सा ही उठा लाये। तुम तो हनुमान जी हो गये।"

12 घर का भेदी लंका ढावे

बच्चो तुम लोगों ने एक कहावत और सुनी होगी – घर का भेदी लंका ढावे। इसका मतलब है कि घर का आदमी ही अगर घर का भेद दूसरों पर खोल देता है तो वह केवल घर को नहीं बल्कि एक पूरे देश को भी बरबाद कर सकता है।

यह कहावत हिन्दू धर्म के एक बहुत बड़े महाकाव्य रामायण से ली गयी है। जैसा कि तुम सब जानते होगे कि रामायण भगवान श्रीराम और राक्षसराज रावण की कहानी है। भगवान श्रीराम अयोध्या के राजा थे और राक्षसराज रावण लंका का राजा था।

एक बार की बात है कि रावण को नारद जी मिले तो उसने उत्सुकतावश उनसे पूछा — "नारद जी, मुझे बतायें कि मुझे कौन मारेगा?"

नारद जी बोले — "अयोध्या में एक राजा होंगे श्रीराम, वही तुमको मारेंगे।"

रावण ने इस बात को मन में रख लिया और इन्तज़ार करने लगा श्रीराम के जन्म का।

रावण की एक बहिन थी शूर्पणखा। वह अपने दूसरे दो भाइयों खर और दूषण के साथ पंचवटी में रहती थी। बनवास के समय श्रीराम भी सीता और लक्ष्मण के साथ पंचवटी में ठहरे हुए थे।

एक दिन शूर्पणखा घूमते घूमते श्रीराम की कुटिया की तरफ आ निकली तो श्रीराम और लक्ष्मण को देख कर वह उन पर मोहित हो गयी और उनसे अपने साथ शादी की प्रार्थना की।

जब वह श्रीराम के पास गयी तो श्रीराम ने सीता की ओर इशारा करते हुए उससे कहा कि उनकी तो शादी हो चुकी है और उनकी पत्नी उनके साथ हैं इसलिये वह उससे शादी नहीं कर सकते।

और लक्ष्मण ने कहा कि वह राम के सेवक हैं और सेवक की कोई अपनी ज़िन्दगी नहीं होती इसलिये वह तो शादी बिल्कुल ही नहीं कर सकते।

शूर्पणखा सीता को अपनी शादी के रास्ते में रुकावट समझ कर उनको खाने दौड़ी तो राम के इशारे पर लक्ष्मण ने उसके नाक कान काट लिये। अपने अपमान का बदला लेने के लिये उसने अपने दोनों भाइयों खर और दूषण को श्रीराम लक्ष्मण को मारने भेजा पर श्रीराम ने उन दोनों को अकेले ही मार दिया।

इस बात की शिकायत ले कर वह रावण के पास लंका पहुँची। वहाँ जा कर उसने रावण को यह सब बताया। उसने रावण को यह भी बताया कि उनके साथ एक बहुत सुन्दर स्त्री भी है। तो रावण को तो रात भर नींद नहीं आयी।

वह सोचता रहा "लगता है यही वे राम हैं जिनकी नारद जी बात कर रहे थे। तो यही मेरा उद्धार करेंगे। इसलिये इनको मुझे मारने के लिये उकसाने के लिये कुछ करना चाहिये।

अब क्योंकि वह राक्षस था इसलिये वह अपने राक्षस स्वभाव के कारण केवल यही सोच सका कि "अगर मैं उन राम की पत्नी को हर लूँ तो वह अपनी पत्नी को छुड़ाने के लिये यहाँ जरूर आयेंगे। बस तब मैं उनको देख लूँगा।

इस तरह से मैं तो दोनों तरह से फायदे में ही रहूँगा। अगर उन्होंने मुझे मार दिया तो मेरा उद्धार हो जायेगा और अगर मैंने उनको मार दिया तो उनकी पत्नी मेरी हो जायेगी। मेरे तो दोनों हाथ लड्डू हैं।"

बस यही सोच कर और अपने इसी प्लान के साथ उसने सीता जी को हर लिया और उनको सुरक्षित लंका में ला कर रख लिया। उसका सोचना ठीक था। किसी की पत्नी कोई अगर उठा कर ले जाये तो वह उसको वापस ले जाने के लिये तो आयेगा ही न।

श्रीराम ने सीता का पता लगाया और रावण से कहा कि या तो वह चुपचाप सीता जी को वापस कर दे नहीं तो लड़ाई के लिये तैयार हो जाये।

अब रावण का काम सीता जी को वापस लौटाने से तो बनता नहीं था क्योंकि सीता जी का हरण उसने इसलिये तो किया नहीं था कि वह उनको चुपचाप वापस कर दे। उसने तो उनका हरण श्रीराम को लड़ाई के लिये उकसाने के लिये किया था।

सो जब रावण को श्रीराम का यह सन्देश मिला कि या तो वह चुपचाप सीता जी को वापस कर दे नहीं तो लड़ाई के लिये तैयार हो

जाये तो उसने उनको चुपचाप वापस करने की बजाय श्रीराम से लड़ना ज़्यादा ठीक समझा।

उस समय उसकी पत्नी, उसके सबसे छोटे भाई विभीषण, उसके सलाहकारों आदि सबने उसको बहुत समझाया कि श्रीराम भगवान हैं उनसे लड़ना ठीक नहीं है। उनको तुम्हें सीता जी को वापस कर के सुलह कर लेनी चाहिये पर उसने तो किसी की एक नहीं सुनी और लड़ाई छिड़ गयी।

इसी बीच विभीषण ने रावण को एक बार फिर समझाया तो गुस्सा हो कर रावण ने विभीषण को पैर मार कर दरबार से निकाल दिया। विभीषण ने अपने चार मन्त्री साथ लिये और श्रीराम से जा कर मिल गये।

श्रीराम रावण की लड़ाई काफी दिनों तक चली। जब रावण के सारे बड़े बड़े वीर, भाई, बच्चे, रिश्तेदार सब लड़ाई में मारे गये तो अन्त में वह खुद श्रीराम से लड़ने के लिये आया। श्रीराम ने उसको मारने की कई बार कोशिश की पर वह नहीं मरा।

रावण के **10** सिर थे और **20** बाँहें थी सो श्रीराम उसको बार बार **30** बाण मार कर मारने की कोशिश कर रहे थे पर वरदान की वजह से जैसे ही वह उसके सिर और बाँहें अपने बाणों से काटते वे फिर से उग आते और इस तरह से वह फिर से ज़िन्दा हो जाता था।

श्रीराम परेशान थे कि आखिर वह क्या करें उसको कैसे मारें।

विभीषण यह सब देख रहे थे। उन्होंने श्रीराम की कोशिशों को नाकाम होते देख कर उनसे कहा कि "भगवन। यह रावण ऐसे नहीं मरेगा। उसकी नाभि में अमृत का एक कुंभ है। जब तक आप उस कुंभ को नहीं फोड़ेंगे वह नहीं मरेगा।"

तब श्रीराम ने उसे **31** बाण मारे – **10** बाण उसके **10** सिरों में, **20** बाण उसकी **20** बाहों में और एक बाण उसकी नाभि में, उस अमृत कुंड को फोड़ने के लिये। तब कहीं जा कर वह मरा और श्रीराम ने लंका जीती।

और इस तरह घर का भेद खोलने वाले ने लंका जैसे शक्तिशाली देश को ढहा दिया। उसी के बाद से यह कहावत चल निकली "घर का भेदी लंका ढावे"।

इस प्रकार अगर कोई अपने भेद की कोई छोटी सी बात भी किसी को बता देता है तो वह केवल उसी आदमी का नुकसान नहीं करता बल्कि लंका जितने बड़े और ताकतवर राज्य को भी नष्ट कर सकता है जैसा कि विभीषण ने किया।

विभीषण ने श्रीराम को अपने भाई को मारने का एक बहुत छोटा सा राज़ बता कर न केवल उसको मरवाया बल्कि लंका के राजा को मरवाया जिससे पूरी लंका का नाश हो गया।

13 कुॅए का मेंढक[56]

कभी तुमने यह कहावत भी सुनी होगी “वह तो कुॅए का मेंढक है उसे तो दुनियॉ में क्या हो रहा है कुछ पता ही नहीं।”

यह कहावत कहॉ से आयी? क्या कुॅए के मेंढक से? हॉ यह कहावत कुॅए के मेंढक से ही आयी। तो लो पढ़ो यह कहानी कुॅए के मेंढक की... ।

हालॉकि यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के तैवान देश में कही सुनी जाती है पर यह कथा केवल वहीं की नहीं है और दूसरे देशों में भी यह कथा कही सुनी जाती है, भारत में भी... ।

जैसा कि तुम जानते हो मेंढक अक्सर तालाबों में या नदियों के आस पास रहते हैं।

पर यह बहुत समय पहले की बात है कि एक छोटा सा मेंढक एक गहरे कुॅए की तली में रहता था। जब उसको प्यास लगती तो पीने के लिये उसके पास बहुत सारा पानी था और जब भूख लगती तो वहॉ खाने के लिये उसके पास बहुत सारे कीड़े थे।

जब वह थक जाता तो अपनी पीठ के बल लेट जाता और आसमान की तरफ देखता रहता जो उसे उस कुॅए के छेद के बहुत ऊपर दिखायी देता था।

---

[56] The Frog in the Well.

हालाँकि उसने अपनी ज़िन्दगी का एक पल भी इस कुँए के बाहर नहीं गुजारा था पर फिर भी वह अपनी ज़िन्दगी से बहुत खुश था – सिवाय एक बात के, और वह यह कि वह बहुत अकेला था। उसके साथ खेलने के लिये कोई नहीं था। उसको खेलने के लिये एक साथी चाहिये था।

सो जब भी कोई जानवर उस कुँए पर पानी पीने आता तो वह उससे अपनी सबसे ऊँची आवाज में बोलता — "क्या तुम नीचे आ कर मेरे साथ खेलना पसन्द करोगे? मेरे पास खाना भी है पानी भी है और रहने के लिये बहुत अच्छी जगह भी। यहाँ से अच्छी जगह और कोई नहीं है। आओ न हम साथ साथ खेलेंगे।"

पर वे जानवर कहते — "बहुत बहुत धन्यवाद मेंढक भाई। पर हमको यहाँ बाहर रहना ज़्यादा पसन्द है। यह दुनियाँ तुम्हारे इस कुँए की दुनियाँ से कहीं बहुत बड़ी और ज़्यादा अच्छी है।"

पर वह छोटा मेंढक कहता — "यहाँ से ज़्यादा अच्छी जगह और कहीं नहीं है तुम यहाँ आ कर देखो तो।"

वहाँ चिड़ियाँ भी उस कुँए पर पानी पीने आतीं तो मेंढक उनसे भी अपने साथ खेलने के लिये कहता तो वे जवाब देतीं — "यहाँ बाहर बहुत अच्छा है मेंढक भाई। तुमको यहाँ बाहर आना चाहिये खेलने के लिये। यह दुनियाँ तुम्हारे इस कुँए की दुनियाँ से बहुत बड़ी और ज़्यादा अच्छी है। तुम बाहर आ कर देखो तो।"

पर वह छोटा मेंढक उनका विश्वास ही नहीं करता और कहता — "मेरे घर से अच्छी और कोई जगह नहीं।"

मेंढक के मुँह से यह बार बार सुनने के बाद जानवरों और चिड़ियों ने फिर उससे बात करना बन्द कर दिया था पर छोटे मेंढक की समझ में ही नहीं आया कि उन्होंने उससे बात करना क्यों बन्द कर दिया?

पर उसकी समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि वे लोग उसके पास रहने के लिये क्यों नहीं आ रहे थे।

एक दिन एक छोटी सी घरेलू चिड़िया उस कुँए पर पानी पीने आयी तो मेंढक ने उससे भी अपने पास आने और खेलने के लिये कहा।

उस चिड़िया ने भी उससे वही कहा जो और जानवर और चिड़ियें उससे कहती चली आ रही थी कि उसके कुँए की दुनियाँ से बाहर की दुनियाँ ज़्यादा बड़ी और अच्छी है।

कह कर उसने मेंढक को बाहर निकाल कर अपने साथ उड़ने के लिये और दुनियाँ देखने को लिये कहा।

उसने मेंढक से कहा कि "तुम यहाँ बाहर आ कर देखो तो कि यह दुनियाँ तुम्हारे इस कुँए की दुनियाँ से कहीं बहुत बड़ी और कहीं ज़्यादा अच्छी है।"

पर छोटे मेंढक को विश्वास ही नहीं हुआ। छोटे मेंढक ने कहा — "तुम मुझसे झूठ क्यों बोलती हो? जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ से अच्छी जगह तो और कोई हो ही नहीं सकती है।"

यह सुन कर वह छोटी घरेलू चिड़िया गुस्सा हो गयी और मेंढक को वहीं छोड़ कर उड़ गयी पर फिर भी वह वहाँ बार बार पानी पीने के लिये आती रही।

वह जब भी वहाँ आती मेंढक उससे नीचे आने और अपने साथ खेलने के लिये कहता पर वह चिड़िया हर बार उड़ जाती।

एक दिन वह चिड़िया कुँए में गयी और बजाय वहाँ रुकने और मेंढक के साथ वहाँ खेलने के उसने मेंढक को वहाँ से अपनी चोंच में उठाया और उस कुँए के बाहर ले आयी और हवा में उड़ गयी।

बाहर निकल कर पहले तो मेंढक को कुछ दिखायी नहीं दिया क्योंकि कुँए के बाहर सूरज की चमकीली रोशनी बहुत तेज़ थी पर फिर उसने हवा में से दुनियाँ देखी।

उस छोटे से मेंढक को वह दुनियाँ देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जितना वह पहले दुनियाँ के बारे में सोचता था दुनियाँ उससे वाकई कितनी ज़्यादा बड़ी थी। अब उसको यह भी महसूस हुआ कि उसका कुँआ कितना छोटा था।

वह चिड़िया से बोला — "धन्यवाद चिड़िया, जो कुछ तुमने मुझे दिखाया उसके लिये तुमको बहुत बहुत धन्यवाद। मैं तुम्हारे

ऊपर विश्वास न करने के लिये माफी माँगता हूँ। अब तुम मुझे यहाँ नीचे उतार दो।"

चिड़िया नीचे उतरी और मेंढक को एक वड़े से और सुन्दर से तालाब के पास हरी हरी मुलायम घास के ऊपर उतार कर बोली — "मुझे अफसोस है कि मैं तुमको तुम्हारी इजाज़त के बिना ही तुम्हारे घर से उठा लायी। अब जब तुम्हारी इच्छा अपने घर वापस जाने की होगी तो तुम मुझे बता देना मैं तुमको वापस ले जाऊँगी।"

चिड़िया को बिना कोई जवाब दिये ही वह मेंढक दुनियाँ देखने की खुशी में उस घास पर इधर उधर कूदने लगा।

वहाँ उसने बहुत सारे रंगों के बहुत सारे फूल देखे। उसने न तो पहले कभी इतने सारे फूल देखे थे और न ही इतनी सुन्दर खुशबू सूँघी थी।

बाहर की दुनियाँ तो वाकई में बहुत बड़ी थी। खुशी के मारे वह चिल्ला कर उस तालाब में कूद पड़ा।

कुछ देर बाद जब वह चिड़िया वहाँ आयी तो उसने मेंढक को वहाँ नहीं देखा तो उसने मेंढक को पुकारा — "ओ छोटे मेंढक, तुम कहाँ हो? तुमको यह बाहर की दुनियाँ कैसी लगी?"

मेंढक बोला — "ओह यह तो बहुत बड़ी और बहुत सुन्दर है। बहुत बहुत धन्यवाद चिड़िया। अगर तुम मुझे यह दुनियाँ दिखाने के लिये यहाँ न लायी होतीं तो मुझे कभी पता ही न चलता कि मेरे कुँए के बाहर इतनी सुन्दर चीज़ें हैं।"

उसके बाद वह मेंढक फिर कभी अपने कुँए में वापस नहीं गया।

सो यहीं से यह कहावत निकली कि "तुम तो कुँए के मेंढक हो।"

इसका मतलब यह होता है कि जब किसी को अपने छोटे से वातावरण से ज़्यादा की बिल्कुल ही कोई जानकारी नहीं होती और वह दूसरी चीज़ों के बारे में जानना भी नहीं चाहता और साथ में अपनी चीज़ को सबसे अच्छा समझता और बताता है तो उसको कुँए का मेंढक बोलते है।

कुँए का दायरा बहुत ही छोटा होता है सो न तो उसमें रहने वाले को अपने चारों तरफ का बहुत ज़्यादा दिखायी दे पाता है। इसके अलावा उसकी दीवारें बहुत ऊँची होती हैं तो न उसको बहुत ऊपर का दिखायी दे पाता है इसलिये उसके देखने का दायरा बहुत ही तंग रहता है।

इसी खासियत को "कुँए का मेंढक" बोलते हैं जैसा कि इस कुँए के मेंढक के साथ हुआ जब तक उसने बाहर निकल कर दुनियाँ नहीं देख ली। और उसके बाद तो वह फिर अपने कुँए में जाना ही नहीं चाहता था

14 खान क्या खाता

बच्चो क्या तुमने यह कहावत भी सुनी है – "खान क्या खाता, अपना पैसा"। क्या तुमने कभी सोचा है कि यह कहावत इस्तेमाल में कैसे आयी और इसका क्या अर्थ होता है। इसकी भी एक कहानी है। तो लो पढ़ो यह कहानी और जानो कि यह कहावत कब और कैसे इस्तेमाल में आयी।

यह बहुत पुरानी बात नहीं है यह तब की बात है जब **1947** से पहले भारत पाकिस्तान बंगला देश सब भारत ही थे। भारत की पश्चिमी सीमा अफगानिस्तान से मिलती थी और दोनों देशों में व्यापारिक सम्बन्ध बहुत अच्छे थे।

इनमें से एक चीज़ जो अफगानिस्तान से भारत बहुत आती थी वह थे सूखे फल और मेवा – खास कर के सूखे फल जैसे किशमिश खूबानी आदि।

अफगानिस्तान के रहने वाले पठान कहलाते थे और वे वहुत सारे सूखे फल ले कर भारत आया करते थे। वे इधर जाड़ों में आते थे जब उनका अपना देश बर्फ से ढका रहता था। वे यहाँ आ कर रहते थे और अपना माल बेचते थे।

जब जाड़ा खत्म हो जाता था तो वे अपने देश वापस चले जाते थे और यहाँ का माल ले जा कर अपने देश में बेच दे देते थे जैसे

कपड़ा और मसाले। क्योंकि देहली एक मुख्य व्यापारिक जगह थी सो वे लोग देहली ही ज़्यादा आते थे।

वैसे तो वे बहुत ही नर्म दिल के लोग होते थे पर एक तो उनको गुस्सा वहुत जल्दी आता था और दूसरे वे पैसा पकड़ बहुत होते थे। यह कहानी एक ऐसे ही अफगानिस्तानी पठान की है।

अफगानिस्तान के कावुल शहर[57] में एक बार एक पठान सौदागर रहता था। हालॉकि उसका पूरा नाम खान हैदर खान था पर अफगानिस्तान के दूसरे लोगों की तरह से लोग उसको खान कह कर ही बुलाते थे।

काबुल के बाजार में खान की एक छोटी सी दूकान थी जहॉ वह मेवा बेचा करता था जैसे बादाम किशमिश सूखी खूबानी अंजीर आदि। सारी गर्मी तो वह ये सूखे फल वहीं बेचता था पर जाड़ा आने से पहले पहले वह अपनी दूकान वहॉ बन्द कर देता था।

फिर वह बहुत सारे सूखे फल बॉधता और उनको बेचने के लिये भारत की तरफ चल देता था। जाड़े भर वह देहली में रहता था और सड़कों पर चक्कर काट काट कर अपना सामान बेचा करता था।

वह अपने पैसे के मामले बहुत ही सावधान था और अपने सामान का बहुत अच्छा सौदा करता था। किसी की जानकारी में खान ने कभी एक पैसा भी बरबाद नहीं किया।

[57] Kabul is the capital of Afganistan.

खान छह फीट से भी ज़्यादा लम्बा था। हमेशा पगड़ी पहनता था और अपने सिर पर सुनहरे रंग के चाँद वाली[58] टोपी पहनता था। जिससे उसकी लम्बाई कुछ और वढ़ जाती थी।

वह ढीला ढाला सलवार कुरता पहनता था और उसके ऊपर कमर तक का एक कोट पहनता था। उसकी बड़ी बड़ी मूँछें थीं और उसकी लम्बी खुली दाढ़ी नीचे तक लटकती रहती। इस वेश में वह बहुत डरावना लगता था।

कुछ लोग उसको देख कर डरते भी थे खास कर के छोटे छोटे बच्चे। पर फिर भी खान के कुछ दोस्त बन गये थे। उन कुछ दोस्तों में से एक था एक लाला[59] जो कपड़ा बेचा करता था।

जब भी खान लाला की दूकान के सामने से गुजरता तो लाला उसको बात करने के लिये बुला लेता। वे अक्सर चाय समोसा[60] साथ साथ खाया करते थे और उनको एक दूसरे का साथ भी अच्छा लगता था।

एक दिन लाला ने खान के लिये एक खास मिठाई मँगवायी। वह पीला रंग लिये कत्थई रंग की मिठाई थी और गोल थी पर वह बीच में से आधी कटी हुई थी। वह इतनी सख्त थी कि उसमें उँगली

[58] The cap whose top part was pf golden color.
[59] Lala means a merchant
[60] Samosa is a popular North Indian snack most commonly eaten with tea.

तो किसी हालत में घुस ही नहीं सकती थी। पर लाला ने उसको तोड़ा और तोड़ कर खान को खाने के लिये दी।

जब खान ने उसको मुँह में रखा वह तो उसको खा कर बहुत खुश हो गया। उसने तो ऐसी कोई चीज़ इससे पहले कभी खायी ही नहीं थी।

उसने तुरन्त ही उसकी बहुत तारीफ करनी शुरू कर दी सो लाला ने उसको और एक टुकड़ा तोड़ कर दिया। खान ने उसकी भी बहुत तारीफ की तो लाला ने फिर उसको एक और टुकड़ा दिया और फिर एक और... ।

इस तरह से खान वह मिठाई खाता ही चला गया और उसकी तारीफ करता चला गया। जब वह मिठाई खा कर खान का पेट भर गया तो उसने लाला से उसका नाम पूछा। लाला ने उसका नाम बताया "सोन हलवा"।

खान ने अपनी आँखें बन्द कर के उस मिठाई के स्वाद का आनन्द लेते हुए कहा कि वह उसका नाम कभी नहीं भूलेगा।

खान ने लाला को उसकी मिठाई सोन हलवा के लिये कई बार धन्यवाद दिया और फिर बची हुई मिठाई की तरफ आखिरी बार नजर डालता हुआ वहाँ से चला गया।

पर वह वह मिठाई नहीं भूला। वह मिठाई थी ही इतनी स्वादिष्ट कि उसको भूलना आसान नहीं था। दिन रात वह मिठाई उसके दिमाग में घूमती रहती। यहाँ तक कि कभी कभी तो वह

उसके सपने में भी आती और उसकी उसको फिर से खाने की इच्छा होती।

अब खान को सोन हलवे का रंग उसकी शक्ल और साइज़ तो मालूम ही था पर उसको यह नहीं मालूम था कि वह उसको मिलेगी कहाँ। कि वह उसको कहाँ से खरीदे। उसने इस बारे में कभी लाला से भी बात नहीं की।

बस उसने अपनी एक आदत बना ली कि वह हर दूकान में झाँकता चलता कि शायद किसी दूकान में उसको सोन हलवा मिल जाये। इस तरह से खान बहुत दिनों तक दूकानें झाँकता रहा। दूकानों में उसने बहुत सारी चीज़ें देखीं पर सोन हलवा उसको कहीं दिखायी नहीं दिया।

अब वह सोहन हलवे की तरफ से कुछ नाउम्मीद सा होता जा रहा था कि एक दिन एक छोटी सी दूकान के सामने उसे वह मिल गया जो वह ढूँढ रहा था।

करीब करीब बीस टुकड़े जो उसको सोन हलवा जैसे लगे वह एक लकड़ी की थाली में रखे हुए थे। हालाँकि वह एक बहुत ही गन्दी सी दिखायी देने वाली दूकान थी पर फिर भी कम से कम उसकी पसन्द की मिठाई तो बेच रही थी।

मिठाई के एक तरफ झाडुओं का एक ढेर रखा हुआ था और दूसरी तरफ रस्सी के गोले रखे हुए थे। एक दो चूहा पकड़ने वाले जाल भी रखे हुए थे।

पर खान को इस बात से क्या मतलब था। उसने सोन हलवे का एक आधा गोला उठाया और उसे खरीदने के लिये दूकान के अन्दर पहुँच गया। उसने उसे चार आने[61] का खरीद लिया।

उसे ले कर खान जल्दी जल्दी चला। जितनी लम्बी उसकी टाँगें थीं उस हिसाब से तो वह बहुत जल्दी चल रहा था। चलते चलते वह बाजार के दूसरे कोने पर एक खुली जगह में आ गया।

वहाँ उस खुली जगह के चारों तरफ एक नीची दीवार बनी हुई थी सो आ कर वह उस नीची दीवार पर बैठ गया। खुश खुश उसने वह आधा गोला उठाया और उसमें अपने दाँत गड़ाये पर उसी समय उसने उसको थूक भी दिया।

यह सोन हलवा तो बहुत ही खराब था। खान ने कुछ पल इन्तजार किया और फिर उसको दोबारा चखा पर फिर थूक दिया। वह अभी भी उसको बहुत ही खराब लग रहा था।

बदकिस्मती से वह तो कुछ ज़्यादा ही खराब लग रहा था। खान यह सोच कर परेशान था कि लाला की दूकान पर तो यह मिठाई बहुत ही स्वादिष्ट लग रही थी फिर यहाँ यह क्यों इतना खराब लग रही है।

अचानक इस सारे मामले पर खान को बहुत गुस्सा आ गया। उसने जब चार आने खर्च किये थे तो उसको वे पैसे तो वसूल करने ही थे। वह अपने पैसे बर्बाद नहीं करना चाहता था।

[61] Before 1957 an Indian Rupee was divided in 16 Anna. Later in 1957 it was decimalized.

सो वह उस दीवार पर मजबूती से बैठ गया और उस हलवे का हर कौर अच्छी तरह से चबा कर खाने लगा हालाँकि उसका हर कौर उसको बहुत ही खराब लग रहा था।

तभी वहाँ से एक आदमी गुजरा। उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि खान बहुत बुरे बुरे मुँह बना कर कुछ खाता जा रहा था जिससे उसके नाक और मुँह से सफेद बुलबुले निकल रहे थे।

यह देख कर वह आदमी खान पर चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या खा रहे हो। यह तो साबुन है। तुम यह साबुन क्यों खा रहे हो।"

उसके इस तरह से बीच में टोकने पर खान उस पर चिल्ला पड़ा। उसने उस आदमी से कहा कि वह गलत था। उसने उस चीज़ को खरीदने के लिये चार आने खर्च किये थे और वह अपने पैसे का पूरा पूरा इस्तेमाल करना चाहता था।

वह उनको किसी भी हालत में बर्बाद नहीं कर सकता था इसलिये उसने जो चीज़ खरीदी थी वह तो उसको खानी ही थी।

आखिर खान ने धीरे धीरे कर के वह सारा साबुन खा लिया। साबुन खा कर वह कई दिनों तक बीमार पड़ा रहा पर उसको यह सन्तोष था कि उसके चार आने बेकार नहीं गये थे।

सो इस कहावत का मतलब होता है कि जब कोई आदमी किसी ऐसी चीज़ का इस्तेमाल उस तरीके से करता है जिस तरीके से

उसका इस्तेमाल उसे नहीं करना चाहिये चाहे उसमें उसका कितना ही पैसा क्यों न लगा हो तो वह कहता है कि "खान क्या खाता अपना पैसा" जैसे कि इस कहानी में खान ने मिठाई नहीं खायी बल्कि अपने चार आने खाये साबुन के रूप में।

अब साबुन खाने से खान का कोई फायदा तो होने वाला नहीं था पर क्योंकि उसको खरीदने में उसने अपने पैसे खर्च किये थे तो उसको तो वह चीज़ खानी ही थी वरन उसके पैसे बेकार जाते जो वह करना नहीं चाहता था।

इसलिये जब कोई आदमी अपने फायदे की जगह अपने पैसे को ज़्यादा महत्ता देता है तब भी यह कहावत इस्तेमाल की जाती है।

15 बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे[62]

बच्चो तुमने यह कहावत तो जरूर ही सुनी होगी "बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे"। इस कहावत को तब इस्तेमाल किया जाता है जब कोई नामुमकिन काम करना होता है या कोई खतरे वाला काम करना होता है।

अब बिल्ली के गले में घंटी बाँधना भी तो नामुमकिन काम ही है न, पर किसके लिये? तुम्हारे लिये नहीं चूहों के लिये। क्या तुम्हें मालूम है कि यह कहावत कहाँ से निकली है।

इस कहावत के निकलने के कई स्रोत हैं पर सब स्रोतों की कहानी करीब करीब एक जैसी ही है।

1 ईसप की कहानियाँ

ईसप की कहानियाँ बहुत सारी शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह है उसमें एक कहानी है "काउन्सिल में चुहिया"। वह कहानी कुछ इस तरह से है।

एक बार कुछ चूहे एक घर की बिल्ली से बहुत परेशान थे। वह अक्सर चूहों को खा जाया करती थी इससे उनकी गिनती कम होती जा रही थी। एक बार सब चूहों ने मिल कर एक मीटिंग की और बिल्ली से बचने का कोई तरीका सुझाने के लिये कहा।

[62] Who Will Bell the Cat

कई सुझाव आये। एक चुहिया बोली — "अगर हम उसके गले में एक घंटी बाँध दें तो उसके आने से पहले ही हमको यह पता चल जायेगा कि वह आ रही है और हम सब छिप जायेंगे और इस तरह से हम सब बच जायेंगे।"

दूसरे चूहों ने कहा सुझाव तो अच्छा है पर "बिल्ली के गले में घंटी बाँधेगा कौन?"

अब यह किसी की समझ में नहीं आया कि यह काम कौन करे क्योंकि जो कोई भी उसके गले में घंटी बाँधने जाता बिल्ली उसी को खा जाती। इसलिये यह सुझाव काम में नहीं लाया जा सका।

यह छोटी सी कहानी हमें यह बताती है कि किसी काम के केवल परिणाम को ही नहीं देखना चाहिये बल्कि साथ में हमें यह भी देखना चाहिये कि वह किया जा सकता है या नहीं। अगर वह किया ही नहीं जा सकता तो उसके परिणाम तक हम कैसे पहुँचेंगे।

पर यह स्रोत कुछ गलत सा लगता है क्योंकि यह कहानी शुरू की ईसप की कहानियों में कहीं भी नहीं मिलती। मध्यकाल में जा कर यह उनमें मिलती है।

आर्चीबाल्ड डगलस

इस कहावत का सबसे अच्छा जाना पहचाना स्रोत स्काटलैंड के एक कुलीन आदमी आर्चीबाल्ड डगलस है जिसको यह प्यार का नाम दे दिया गया था।[63]

पंचतन्त्र की कहानी

इसकी एक कहानी भारत की पंचतन्त्र की कहानियों में भी पायी जाती है। पंचतन्त्र की कहानियों के अनुसार एक बार एक दाल मसाले वाले की दूकान में बहुत सारे चूहे रहते थे। वे वहॉ गेहूॅ चावल चीज़ बिस्कुट आदि बहुत सारी चीज़ें खाया करते थे जो वह आदमी बेचा करता था।

वे वहॉ खूब मजे ले रहे थे और उस आदमी की दूकान से खाने का सामान खा खा कर खूब मोटे हो रहे थे। पर दूकानदार अपने सामान के नुकसान की वजह से बहुत परेशान और दुखी था।

उसके दिमाग में उन चूहों से बचने की एक तरकीब आयी कि वह एक बिल्ली खरीद लाये वह उन चूहों को खा जायेगी। सो वह एक बिल्ली खरीद लाया और उसे दूकान में रख दिया।

---

[63] Archibald Douglas, a Scotland nobleman, to whom "The Belling the Cat" nickname was given. In 1482, in a meeting of noblemen wanted to depose Robert Cochrane, but who could do that. Lord Gray remarked "It is well said, but who will bell the cat". After this he was known as "Archie Bell-the-Cat"

बिल्ली ने आते ही अपना काम शुरू कर दिया। अब वह रोज चूहे खाने लगी। इस वजह से चूहों ने अपने बिलों में से निकलना तक बन्द कर दिया। उनको खाना मिलना बन्द हो गया। अब यह तो उनके लिये बड़ी चिन्ता का विषय हो गया क्योंकि वे सब भूखे मरने लगे।

इस परेशानी को दूर करने के लिये चूहों ने एक मीटिंग की। सब चूहों ने सोचना शुरू किया। किसी ने कुछ सलाह दी किसी ने कुछ। पर कोई सलाह काम नहीं कर रही थी। पर इस बात पर सब एक राय थे कि बिल्ली को यहाँ से हटाये बिना काम नहीं चलेगा। पर कैसे।

अन्त में एक चूहा बोला — "अगर हम बिल्ली को मार नहीं सकते तो हमको उसके गले में एक घंटी बाँध देनी चाहिये ताकि जब भी वह हमारे पास आये तो हमको पता चल जाये कि वह हमारे आसपास है और हम उससे बच जायें।"

सब चूहों ने उस बूढ़े चूहे के इस विचार की बहुत प्रशंसा की कि यह सबसे अच्छा प्लान था। यह सुन कर उन्होंने तो नाचना गाना शुरू कर दिया।

पर उनका यह नाचना गाना बहुत देर तक नहीं चला क्योंकि तभी एक दूसरा बूढ़ा चूहा बोल पड़ा — "अरे बेवकूफो ज़रा यह तो बताओ कि बिल्ली के गले में गले में घंटी बाँधेगा कौन?"

यह सवाल सुन कर तो सारे चूहे नाचते नाचते रुक गये। किसी चूहे के पास इस सवाल का जवाब नहीं था। इस समस्या के बारे में तो उन्होंने सोचा ही नहीं था। सारे चूहे मुँह लटका कर बैठ गये।

इसी लिये कहा गया है कि प्लान बनाना एक बात है और उसको काम में लाना दूसरी बात। प्लान ऐसा होना चाहिये जिसको काम में लाया जा सके।

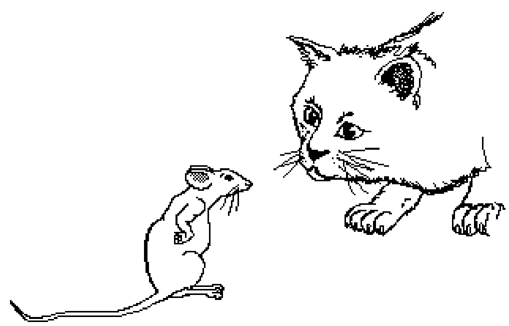

16 न तीन में न तेरह में[64]

न तीन में न तेरह में एक ऐसी कहावत है जिसको जब इस्तेमाल किया जाता है जब कोई आदमी अपने आपको बहुत ऊँची चीज़ समझता है पर जब उसके बारे में पता किया जाता है तो उसका कोई मूल्य नहीं होता तब वह न तीन में होता है और न तेरह में होता है। न तो वह ऊँची चीज़ों की गिनती में आता है और न ही बेकार की चीज़ों की गिनती में।

इस कहावत के पीछे भी एक कहानी है जो शायद तुम्हें मालूम नहीं होगी। यह कहानी यह बताती ही कि इस कहावत का जन्म कैसे हुआ। तो आज हम तुम्हें इस कहावत के जन्म की कहानी सुनाते हैं।

एक बार की बात है कि एक शहर में एक सेठ जी रहते थे। उनके पास बहुत सारी दौलत थी। उनका एक बहुत बड़ा सा बंगला था उनके यहाँ बहुत सारे नौकर चाकर काम करते थे और इस सब की देखभाल के लिये उनके यहाँ एक मुनीम भी काम करता था।

शहर में बहुत सारे उत्सव मनाये जाते थे। सेठ जी उन सब उत्सवों में बुलाये जाते थे। कभी उनकी मुलाकात ऐसे ही किसी उत्सव में शहर की किसी मशहूर एक वेश्या से हो गयी।

---

64 Taken from the Web Site : http://www.100rupees.com/forums/showthread.php?t=10369

वेश्या ने भी उनको शहर का एक बड़ा सेठ जान कर उनका आदर किया और फिर उनको अपने घर पर भी बुलाया।

बस उसके बाद तो सेठ जी अक्सर ही उस वेश्या के घर जाने लगे। उनकी शामें उसी के घर में बीतने लगीं। वेश्या भी उनको अमीर जान कर उनका बहुत आदर करती थी और कुछ ही दिनों में उसने उनको यह पक्का यकीन दिला दिया कि वह उनसे बहुत प्यार करती थी।

अब ऐसी बातें छिपती कहाँ हैं सारे शहर में खबर फैल गयी कि सेठ जी तो शहर की फलाँ वेश्या के घर बैठे रहते हैं। इससे उनके काम धन्धे पर असर पड़ने लगा। मुनीम जी की आँखें फटने लगीं कि यह सब क्या हो रहा है और वह अब क्या करें।

एक दिन सेठ जी की तबियत खराब हो गयी तो वह उस दिन उस वेश्या के घर नहीं जा सके। तबियत नहीं सुधरी तो फिर वह कई दिनों तक उसके घर नहीं जा सके।

इस बीच उस वेश्या का जन्म दिन आया तो उन्होंने उस दिन सोचा कि वह उसके लिये एक हीरों का हार भेजेंगे। सेठ जी ने मुनीम जी को बुलाया और उनसे कहा कि वह हीरों जड़ा एक नौलखा हार खरीदें और उस वेश्या को दे कर आयें।

अब मुनीम जी तो मुनीम थे खानदानी मुनीम। वह तो केवल सेठ के प्रति ही वफादार नहीं थे बल्कि उनके पूरे परिवार के प्रति वफादार थे।

उन्होंने सेठ जी को बहुत समझाने की बहुत कोशिश की कि वह यह सब एक वेश्या के लिये कर के भूल कर रहे हैं। वेश्याऐं किसी की नहीं होतीं। वेश्याऐं किसी से प्यार नहीं करतीं।

लेकिन सेठ जी की समझ में कुछ नहीं आया। उन्होंने सख्ती से कहा कि जैसा उन्होंने कहा है वैसा ही किया जाये। वह उस वेश्या के पास उनकी भेंट ले कर जरूर जायें।

मुनीम जी बेचारे क्या करते। उन्होंने हीरों जड़ा एक नौलखा हार खरीदा और उस वेश्या के घर चल पड़े। लेकिन रास्ते भर वह इस समस्या का हल सोचते रहे। आखिर मुनीम थे न सोच ही लिया उन्होंने इस समस्या का हल।

वह नौलखा हार ले कर वेश्या के घर पहुँचे और बोले — "यह तोहफा उसकी ओर से जिसे तुम सबसे ज़्यादा प्यार करती हो।"

वेश्या ने फटाफट तीन नाम गिना दिये और पूछा कि मुनीम जी वह तोहफा क्या उन तीनों में किसी के पास से लाये हैं?

मुनीम जी को कोई आश्चर्य नहीं हुआ जब उन तीनों में से एक भी नाम सेठ जी का नाम नहीं था। मुनीम जी ने मुस्कुराते हुए कहा कि "देवी इन तीनों में तो उनका नाम नहीं है जिन्होंने यह तोहफा आपके लिये भिजवाया है।"

यह सुन कर वेश्या तो भौचक्की रह गयी। वह सोचती रह गयी कि फिर ऐसा कौन हो सकता है जिसे मैं सबसे ज़्यादा प्यार करती हूँ और उसका नाम इन तीन नामों में से नहीं है।

उसके सामने नौलखा हार था और वह उसका नाम नहीं बता पा रही थी जिसने उसे भिजवाया होगा। उसने देखा कि अब तो हार उसके हाथ से गया तो परेशान हो कर उसने **13** नाम गिनवा दिये। पर आश्चर्य उन **13** नामों में भी सेठ जी का नाम नहीं था।

पर यह देख कर मुनीम जी का चेहरा तमतमा गया। उन्होंने वह हीरों का नौलखा हार उठा कर बक्से में बन्द किया और वहॉ से चलते बने। वेश्या गिड़गिड़ाने लगी कि उससे भूल हो गयी पर मुनीम जी रुकने वाले कहॉ थे।

इधर बीमार सेठ जी मुनीम जी के आने का इन्तजार कर रहे थे। वेश्या के जवाब का इन्तजार कर रहे थे।

मुनीम जी घर आये और सेठ के सामने वह हार पटकते हुए बोले — "यह लीजिये अपना नौलखा हार। आप न तो तीन में हैं और न तेरह में बस यूॅ ही खुश हुए बैठे हैं।"

कह कर मुनीम जी ने वेश्या के घर में हुआ सारा हाल बता दिया। सेठ जी की ऑखें खुल गयीं थीं। उसके बाद वह फिर कभी उस वेश्या को तो छोड़ो किसी और वेश्या के घर भी नहीं गये।

बस तभी से यह कहावत चल निकली है "न तीन में न तेरह में" जिसका मतलब है कि "तुम तो कहीं नहीं हो फिर किस भुलावे में बैठे हो।" या "तुम्हारी तो कोई कीमत ही नहीं है और समझते हो अपने आपको पता नहीं क्या।"

17 टेढ़ी खीर[65]

टेढ़ी खीर का मतलब है कि किसी काम को करने में मुश्किल होना। जैसे अगर किसी कंजूस से किसी जगह पैसा खर्च करवाना हो तो उसके लिये यह कहा जा सकता है "फलॉ आदमी से पैसा निकलवाना बड़ी टेढ़ी खीर है।"

आओ तो इस कहावत का जन्म कैसे हुआ यह देखते हैं। एक छोटे से कस्बे में एक नौजवान रहता था। उसके माता पिता बहुत अमीर तो नहीं थे पर गरीब भी नहीं थे। वह बहुत ही सीधा सादा था और बहुत सारे लोगों से मिलना जुलना पसन्द करता था।

एक दिन उसकी मुलाकात उसके अपनी उम्र वाले एक नौजवान से हुई। दोनों में बातें हुईं और दोनों दोस्त बन गये।

दोनों में काफी समानता थी पर बस उन दोनों में दो फर्क थे। एक तो यह कि वह दूसरा नौजवान एक गरीब घर से आता था और इतना गरीब था कि उसको घर में दोनों समय का खाना भी मुश्किल से मिल पाता था।

दूसरे वह बेचारा जन्म से ही अन्धा था। उसने कभी कुछ देखा ही नहीं था। वह दुनियाँ को बस अपने तरीके से ही टटोल टटोल कर पहचानता था। लेकिन फिर भी वे दोस्त रहे और उनकी यह दोस्ती धीरे धीरे पक्की होती गयी।

---

[65] Taken from the Web Site : http://www.100rupees.com/forums/showthread.php?t=10369

एक दिन नौजवान ने अपने गरीब दोस्त को खाने का न्यौता दिया। गरीब दोस्त ने उसका न्यौता तुरन्त ही स्वीकार कर लिया। उसका गरीब दोस्त पहली बार उसके घर खाना खाने आ रहा था तो उसने उसकी खातिरदारी में कोई कसर नहीं छोड़ी। उसने कई तरह के खाने बनवाये।

दोनों ने मिल कर खाना खाया। गरीब दोस्त को बहुत अच्छा लग रहा था। उसने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार इतना अच्छा खाना खाया था। उसके खाने में कई चीज़ें तो ऐसी थीं कि वे उसने पहले कभी खायी ही नहीं थीं।

इसमें एक खीर भी शामिल थी। खीर खाते खाते उसने पूछा — "दोस्त इसको क्या कहते हैं। यह तो बहुत ही स्वादिष्ट है।"

नौजवान ने उत्साह से कहा — "दोस्त इसे खीर कहते हैं।"

गरीब दोस्त ने पूछा — "तो यह खीर दिखती कैसी है।"

नौजवान ने कहा — "बिल्कुल दूध की तरह सफेद।"

अब जिसने कभी रोशनी न देखी हो तो वह सफेद क्या जाने और काला क्या जाने। उसने पूछा — "यह सफेद कैसा होता है।"

अब नौजवान थोड़ा सकपका गया वह उसे कैसे समझाये कि सफेद कैसा होता है। उस बेचारे ने उसको कई तरह से समझाने की कोशिश की पर बात बनी नहीं। न वह उसको समझा पाया और न वह ही उसको समझ पाया।

आखिर उसने कहा — "दोस्त जैसा कि बगुला होता है।"

"और दोस्त बगुला कैसा होता है।"

अब यह एक और मुसीबत आ खड़ी हुई। अब वह उसको यह कैसे समझाये कि बगुला कैसा होता है। काफी सोच विचार के बाद उसको एक तरकीब सूझी।

उसने अपना हाथ आगे किया। उॅगलियों को जोड़ कर चोंच जैसी शक्ल बनायी और कलाई से हाथ को मोड़ लिया फिर कोहनी मोड़ कर कहा — "देखो लो छू कर देखो बगुला ऐसा होता है।"

गरीब अन्धे दोस्त ने उत्सुकता में अपने हाथ बढ़ाये और अपने दोस्त का हाथ छू छू कर देखने लगा। हालॉकि हाथ छू कर वह यह जानने की कोशिश कर रहा था कि बगुला कैसा होता है पर उसके मन में यह था कि खीर कैसी होती है।

जब उसने हाथ अच्छी तरह टटोल कर देख लिया तो वह बोला — "अरे बाबा यह खीर तो बड़ी टेढ़ी चीज़ होती है।" कह कर वह फिर से खीर का आनन्द लेने लगा।

और तबसे खीर टेढ़ी होने लगी यानी वह किसी भी मुश्किल काम को करने के लिये आसान बनाने का एक मुहावरा बन चुकी थी।

18 बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद[66]

बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद एक बहुत ही लोकप्रिय कहावत है। और यह तब ज़्यादा इस्तेमाल की जाती है जब किसी को किसी चीज़ की पहचान नहीं होती कि उसको कैसे इस्तेमाल करते हैं या उसको किसी खास खाने का स्वाद ही नहीं पता होता तो लोग कहते हैं कि बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद।

यह कहावत कैसे निकली आज हम तुमको इसकी कहानी बताते हैं।

एक बार की बात ही एक बन्दर एक जंगल में रहता था। एक बार वहाँ जानवरों ने पार्टी दी। बहुत सारे जानवर आये हुए थे। पार्टी गीदड़ के घर में थी। सब जानवरों ने खूब पेट भर कर खाना खाया।

खाने के बाद गीदड़ ने सबको अदरख के छोटे छोटे टुकड़े खाने के लिये दिये। उनमें नीबू का रस और नमक भी लगा हुआ था। सबने एक एक दो दो टुकड़े उठाये और अपने मुँह में रख कर उन्हें चूसने लगे।

बन्दर ने भी उसमें से अदरख का एक टुकड़ा उठाया और अपने मुँह में रख लिया। बन्दर ने अदरख पहले कभी नहीं खाया

[66] Taken from the Web Site : http://www.100rupees.com/forums/showthread.php?t=10369

था। उसको वह बहुत अच्छा लगा। मगर वह और नहीं ले सकता था क्योंकि वहाँ किसी और ने दोबारा अदरख लिया ही नहीं।

अदरख के स्वाद की तारीफ करते करते बन्दर घर आया। अब क्योंकि वह उसको बहुत अच्छा लगा तो घर आते समय वह बाजार से बहुत सारा अदरख घर ले आया था।

घर आ कर उसने अदरख को ठीक उसी तरह छोटे छोटे टुकड़ों में काटा और नमक और नीबू का रस लगाया जैसे कि उसने गीदड़ के घर खाया था।

इस बार उसने दो तीन टुकड़ों की बजाय मुट्ठी भर कर अदरख मुँह में डाल लिया। बस फिर बन्दर को उस अदरख का क्या स्वाद आया होगा यह तो तुम लोग समझ ही सकते हो।

बस बन्दर ने उस दिन से तौबा कर ली कि वह अब अदरख फिर कभी नहीं खायेगा। फिर बन्दर सबसे कहता फिरा कि अदरख तो बहुत बेस्वाद चीज़ है। और जंगल में दूसरे जानवर यह कहते फिरे कि बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद। क्योंकि बन्दर को यह मालूम ही नहीं था कि अदरख कैसे खाया जाता है।

19 मूँछों की लड़ाई[67]

सन् 1200 के लगभग उत्तर प्रदेश के जिला कन्नौज में राठौर, दिल्ली और अजमेर में चौहान, चित्तौड़ में सिसौदिया और गुजरात में सोलंकी ये चार राजपूत परिवार राज्य कर रहे थे।

राजपूतों की दो विशेषताऐं थीं – एक तो उनकी मूँछें। मूँछें उनकी शान थीं। उनकी तो बस मूँछें नहीं झुकनी चाहिये थीं चाहे और कुछ हो जाये। और दूसरी उनकी तलवार। राजपूतों में तो तलवार से ही शादियाँ हो जाया करती थीं।

इन सब राजपूत परिवारों में आपस में बहुत ईर्ष्या रहती थी। इसी ईर्ष्या की वजह से विदेशी मुस्लिम राजाओं को यहाँ राज करने का मौका मिला।

एक बार की बात है कि गुजरात के सोलंकी राज परिवार के कुछ लोग गुस्सा हो कर गुजरात से अजमेर आ गये। अजमेर और देहली में उस समय पृथ्वीराज चौहान राज करते थे।

पृथ्वीराज चौहान के पिता सोमेश्वर सिंह जी ने सोलंकी परिवार के लोगों का बहुत प्रेम से स्वागत किया। और सोलंकी परिवार के लोग भी चौहान परिवार के लोगों के साथ हमेशा नम्रता से रहे।

[67] Taken from the Web Site : http://www.100rupees.com/forums/showthread.php?t=10369

हालाँकि राजकीय परिवारों को मेहमानों के आदर करने का महत्व पता था पर फिर भी यह जरूरी तो नहीं कि परिवार का हर सदस्य इस बात को माने।

पृथ्वीराज और सोमेश्वर सिंह जी के साथ भी यही हो रहा था। पृथ्वीराज और सोमेश्वर सिंह जी तो अपने मेहमान के साथ बहुत विनम्र थे पर सोमेश्वर सिंह जी के छोटे भाई कान्ह कुँवर जी उनके साथ उतने ही कठोर थे।

एक दिन की बात है कि राजा सोमेश्वर सिंह जी और पृथ्वीराज चौहान दोनों ही अपने दरबार में नहीं थे तो एक सोलंकी सरदार ने अपनी मूँछों पर ताव देना शुरू किया।

कान्ह कुँवर जी ने भी राजा सोमेश्वर सिंह जी और पृथ्वीराज चौहान के वहाँ न होने का फायदा उठाया। उन्होंने मूँछों पर ताव देते हुए सरदार की यह कहते हुए हत्या कर दी कि चौहानों के सामने कोई अपनी मूँछों पर ताव नहीं दे सकता।

बस अब यह तो बहुत बड़ी बात हो गयी। यह तो दुश्मनी का बीज बो दिया गया।

कुछ देर बाद पृथ्वीराज चौहान दरबार में आये तो यह मामला सुन कर भौंचक्के रह गये। मेहमान राज परिवार के साथ हुई यह घटना उनको बहुत बुरी लगी।

उनको कान्ह कुँवर जी का यह व्यवहार गलत ही नहीं बल्कि सोलंकियों से दुश्मनी बढ़ाने वाला लगा सो उन्होंने हुक्म दिया कि

कान्ह कुँवर की आँखों पर पट्टी बाँध दी जाये और केवल युद्ध के समय के अलावा और कभी न खोली जाये। इस घटना के बाद बाकी बचे हुए सोलंकी मेहमान गुजरात लौट गये।

गुजरात के सोलंकी परिवार को यह घटना अपना बहुत बड़ा अपमान लगी। सो मूलचंद सोलंकी ने अजमेर पर चढ़ाई कर दी। सोमवती युद्धक्षेत्र में बहुत ज़ोर से लड़ाई हुई। मूलचंद सोलंकी ने मौका पाते ही राजा सोमेश्वर सिंह की गर्दन धड़ से अलग कर दी।

इस तरह मूँछों की लड़ाई में पहली भेंट राजा सोमेश्वर सिंह की चढ़ी। पर अभी यह किस्सा खत्म नहीं हुआ था। इस घटना के बाद तो चौहान और सोलंकी परिवार दोनों एक दूसरे के जानी दुश्मन बन गये।

बाद में जब सोलंकी परिवार की बेटी संयोगिता के स्वयंवर का मौका आया तो सोलंकी परिवार ने राजा जयचंद का साथ दिया और पृथ्वीराज को उनसे दुश्मनी की वजह से नहीं बुलाया।

पर संयोगिता पृथ्वीराज चौहान को प्यार करती थी और उन्हीं से शादी करना चाहती थी। सो उसने अपने स्वयंवर में पृथ्वीराज चौहान को बुलाया। पृथ्वीराज चौहान संयोगिता का हरण करने के लिये आये और उसका हरण कर के ले गये।

कहते हैं कि संयोगिता हरण के समय पृथ्वीराज चौहान ने अपनी सुरक्षा के लिये अपने पक्ष के **108** राजाओं की सेना को

कन्नौज से ले कर देहली तक के रास्ते में थोड़ी थोड़ी दूर पर खड़ा कर दिया था।

उधर राजा जयचंद ने भी अपनी सेना में अपने आधीन राजाओं की सेना मिला कर काफी बड़ी सेना बना ली थी। सो देहली से कन्नौज तक दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध होता चला गया था।

इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान जीत तो गया पर भारत के बहुत बड़े बड़े वीर मारे गये। पृथ्वीराज चौहान के **108** साथी राजाओं में से **64** राजा मारे गये।

सो जब मुहम्मद गौरी हिन्दुस्तान आया तो उसने दोनों परिवारों को अलग अलग बड़ी आसानी से हरा दिया। मुहम्मद गौरी से लड़ने पर पृथ्वीराज चौहान भी काफी कमजोर पड़ गया था।

इस तरह कान्ह कुँवर जी की बेवकूफी और घमंड की वजह से देश कितनी मुसीबत में फँस गया। आज तक यह बेकार की लड़ाई मूँछों की लड़ाई के नाम से जानी जाती है। इसी लिये हिन्दी में यह मुहावरा बन गया "मूँछों की लड़ाई"।

आज भी जब लोग किसी बेकार की बात को या किसी बहुत छोटी सी बात को अपने अहम के साथ जोड़ते हैं और उस पर मरने मारने के लिये तैयार हो जाते हैं तो वे कहते हैं कि "यह तो मेरी मूँछों की बात है।" या "मेरी मूँछें नीची नहीं हो सकतीं।" पर वे शायद यह भूल जाते हैं कि ऐसी बेकार की लड़ाइयाँ कितना नुकसान कराती हैं।

20 ऊँट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं आता

एक कहावत है "ऊँट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं आता तभी तक वह अपने आपको सबसे ऊँचा समझता है।" हालाँकि इसका मतलब तो बिल्कुल साफ है और यह इसी मतलब से इस्तेमाल भी की जाती है।

इसका मतलब है कि जब तक किसी आदमी को अपने से बेहतर आदमी नहीं मिलता तब तक वह अपने आपको ही ऊँचा या अच्छा समझता है। पर इस कहावत का जन्म ही कैसे हुआ यह देखने वाली बात है।

एक बार की बात है कि एक आदमी के पास कई जानवर थे। उसके पास उन कई जानवरों को साथ साथ एक ऊँट भी था। वह ऊँट क्योंकि उन जानवरों में सबसे ऊँचा जानवर था तो वह बड़े घमंड में रहता था। वह सब जानवरों से अपनी शेखी बघारता रहता था कि "तुम लोग मेरे सामने क्या हो। देखो मैं सबसे ऊँचा जानवर हूँ।"

दूसरे जानवर बेचारे रोज यह सब सुनते सुनते तंग आ गये थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे उस ऊँट की उसकी इस शान बघारने की आदत को कैसे रोकें। हालाँकि यह सच था पर रोज रोज यही बात सुनते सुनते उनके कान पक गये थे।

एक दिन उन सबने आपस में मीटिंग की और दूसरे जानवरों से इस बारे में सलाह माँगी। सब जानवर इस बात पर राजी तो थे कि ऊँट उन सबमें ऊँचा जानवर था पर वे सब ऊँट की इस आदत से परेशान थे कि वह अपनी ऊँचाई की शेखी बहुत बघारता था।

अब उनकी यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह उसकी इस आदत को रोकें कैसे क्योंकि यह भी सच था कि ऊँट सबसे ऊँचा जानवर था और कोई इसको नकार नहीं सकता था परन्तु फिर भी इसका बार बार क्या शेखी बघारना।

बहुत देर तक सोचने विचारने के बाद यह तय पाया गया कि उस ऊँट को कहीं ऐसी जगह ले जाया जाये जो उससे भी ऊँची हो। अब ऐसी जगह कौन सी हो सकती है जो उस ऊँट से भी ऊँची हो।

पास में एक पहाड़ था जानवरों ने सोचा अगर हम इस ऊँट को इस पहाड़ के नीचे ले जायें तो इस पहाड़ को देख कर शायद इसका घमंड टूट जाये।

सो एक दिन उन्होंने ऊँट से कहा — "ऊँट भाई चलो आज घूमने चलते हैं।"

सुन कर ऊँट बहुत खुश हुआ। वह बोला — "यह तो बहुत अच्छा प्रोग्राम है चलो चलें।"

और सारे जानवर घूमने चल दिये। घूमते घूमते वे सब पहाड़ के नीचे से गुजरे। ऊँट ने जब उसे देखा तो उसको तो उसका ऊपर

का सिरा ही दिखायी नहीं दिया जिससे वह यह पहचान सकता कि वह क्या चीज़ है।

सो उसने पूछा — “यह क्या चीज़ है मुझे तो इसका ऊपर का सिरा ही दिखायी नहीं दे रहा।”

जानवर बोले — “यह पहाड़ है ऊँट भाई।”

ऊँट बोला — “अच्छा यह पहाड़ है? यह तो बहुत ऊँचा है। यह तो मुझसे भी ऊँचा है। मैं तो इसके सामने कुछ भी नहीं।”

कहता हुआ वह कुछ उदास हो गया।

उस दिन के बाद से उसने कभी अपनी ऊँचाई की शेखी नहीं बघारी क्योंकि उसको पता चल गया था कि दुनियाँ में उससे ऊँचा भी कोई है।

लेकिन उस दिन के बाद से फिर यह कहावत बन गयी “कि ऊँट तभी तक अपने आपको सबसे ऊँचा समझता है जब तक वह पहाड़ के नीचे नहीं आता”।

इसका मतलब यह है कि कोई आदमी तभी तक अपने आपको ताकतवर या होशियार या अक्लमन्द समझता है जब तक उसको अपने से ज़्यादा ताकतवर या होशियार या अक्लमन्द आदमी नहीं मिल जाता।

21 तीस मार खाँ की कहानी[68]

बच्चो क्या तुमने तीस मार खाँ की कहावत सुनी है? जब लोग कोई छोटा सा काम कर लेते हैं और फिर अक्सर कहते हैं "मैंने यह किया मैंने वह किया।" तो लोग कह देते हैं "उँह क्या तीस मार खाँ बना फिरता है हिम्मत हो तो ज़रा यह काम कर के दिखा न।"

तीस मार खाँ बनने का मतलब होता है किसी बहुत ही छोटे से काम कर लेने पर बहुत शेखी बघारना। यानी "अगर तूने यह छोटा सा काम कर लिया तो कौन सा बहुत बड़ा तीर मार लिया। अपने आपको तीस मार खाँ बना फिरता है तो तू यह वाला काम कर के तो दिखा न।"

तो लो सुनो इस कहावत के जन्म की कहानी कि आखिर यह कहावत बनी ही कैसे।

एक बार की बात है कि भारत में एक बड़ी उम्र की विधवा रहती थी जिसके एक ही बेटा था। वह बहुत ही आलसी था। हालाँकि वह विधवा बेचारी तो बहुत मेहनती थी पर जैसे जैसे उसका वह बेटा बड़ा होता गया वह और आलसी होता गया। वह सारा सारा दिन कुछ नहीं करता था।

---

[68] "Who Was Tees Maar Khan in History?" by Nirmal Goyal. Taken from the Web Site: https://www.quora.com/Who-was-Tees-Mar-Khan-in-history
Read more Tees Maar Khan Jaisi Kahaniyan in my book "Tees Maar Khan Jaisi Kahaniyan" written in Hindi. Available from hindifolktales@gmail.com

एक दिन जब वह लड़का काफी बड़ा हो गया तो उसकी माँ ने उससे कहा कि अब उसके गाँव छोड़ने का समय आ गया है ताकि वह कुछ बन सके। सो उसने उसके लिये चार रोटियाँ बाँधीं और उसको शहर के लिये विदा किया।

लड़का चलता गया चलता गया जब तक रात नहीं हो गयी। उस समय वह एक जंगल से गुजर रहा था। वहाँ पहुँच कर वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और अपनी पोटली खोल कर अपनी रोटी खाने लगा जो उसकी माँ ने उसको बाँध कर दी थीं।

जैसे ही उसने अपने खाने की पोटली खोली तो उसकी सुगन्ध ने पास में उड़ रही मक्खियों को आकर्षित कर लिया। वे उसकी सबसे ऊपर रखी रोटी पर आ कर बैठ गयीं।

लड़के को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा सो उसने उनको वहाँ से उड़ाने के लिये अपना हाथ उस रोटी पर ज़ोर से मारा। जब उसने अपना हाथ रोटी पर से उठाया तो उसने देखा कि उसकी रोटी पर तो बहुत सारी मक्खियाँ मरी पड़ीं हैं। उसने उनको गिनना शुरू किया तो एक दो तीन चार... कुल मिला कर तीस मक्खियाँ थीं।

इसका मतलब यह हुआ कि उसने एक बार में एक हाथ से तीस मक्खियाँ मार दी थीं। तो वह तो अपने इस कारनामे पर बहुत ही खुश हो गया।

अगली सुबह वह एक दूसरे गाँव पहुँचा। वहाँ जा कर वह जिस पहले आदमी से मिला उससे उसने कहा “मैंने एक बार में 30 मार दीं।”

वह आदमी यह सुन कर उससे बहुत प्रभावित हुआ। बिना यह जाने कि उसने 30 क्या मार दिया था उसने यह बात सारे राज्य में फैला दी कि एक आदमी आया है जिसने 30 आदमी एक बार में ही मार दिये हैं। सो लोगों में वह तीस मार खाँ[69] के नाम से मशहूर हो गया।

फैलते फैलते यह खबर राजा के पास पहुँची। यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ कि उसने एक बार में ही 30 लोग मार दिये। उसने उसे अपनी सेना का सेनापति बना लिया। उसने उसको रहने के लिये घर दिया और भी बहुत सारा आराम का सामान दिया।

कुछ दिनों तक तो तीस मार खाँ राजा की नौकरी में रहा कि जल्दी ही राज्य में एक भालू आ पहुँचा जो वहाँ के लोगों को मार मार कर तंग कर रहा था।

जनता में खलबली मच गयी तो राजा ने तीस मार खाँ से कहा कि वह इस मामले को देखे और राज्य में शान्ति कायम रखे। अब तीस मार खाँ राजा से बहस तो कर नहीं सकता था सो उसने एक रस्सी ली और एक खच्चर लिया और उस गाँव में आ पहुँचा जहाँ यह सब हो रहा था।

---

[69] Who killed thirty?

वह वहॉ शाम को आया क्योंकि वह जानवर उसी समय लोगों पर हमला किया करता था। बहुत सारे लोग तो उसके डर के मारे उस समय अपने अपने घरों में छिप गये पर तीस मार खॉ को एक गरीब बूढ़ी कुम्हारिन मिल गयी जो अपने मिट्टी के बर्तन और दूसरी चीज़ें घर के बाहर ला ला कर रख रही थी।

उसको देख कर तीस मार खॉ ने उससे पूछा कि इस समय वह बाहर वहॉ क्या कर रही थी जबकि सारे लोग भालू के डर के मारे अपने अपने घरों में घुसे बैठे थे।

उस समय आसमान में काले काले बादल मॅडरा रहे थे। बारिश होने के आसार थे सो उस बुढ़िया ने आसमान की तरफ इशारा करते हुए कहा "देखो ज़रा कितनी ज़ोर से बारिश आने वाली है। मैं उस भालू से नहीं डरती जितना कि मैं अपनी छत के टपके से डरती हूॅ। अगर मेरा घर टपक गया तो मेरा सारा सामान खराब हो जायेगा।"

जब यह सब बातें हो रहीं थी तो उनको पता ही नहीं था कि भालू वहीं पास में खड़ा यह सब सुन रहा था और अपने हमले की तैयारी कर रहा था।

जब उसने उस बुढ़िया के शब्द सुने तो वह तो डर के मारे वहीं का वहीं खड़ा रह गया। उसने सोचा यह टपका क्या होता है जो उससे भी ज़्यादा भयानक है। जरूर ही वह कोई उससे भी बड़ा और भयानक जानवर होगा।

तीस मार खाँ ने अपने खच्चर को उस रात अपने पास ही रखा ताकि वह उसे शिकार को पकड़ने के लिये चारे की तरह इस्तेमाल कर सके। वह एक पेड़ के सहारे बैठ गया और भालू का इन्तजार करने लगा।

वह बैठे बैठे थक गया तो उसको नींद आ गयी। जब उसकी आँख खुली तभी भी आधी रात ही थी। बारिश शुरू हो गयी थी और उसने उसको अपने सिर पर पड़ते महसूस किया।

यह सोचते हुए कि जानवर ऐसी बारिश में अब नहीं आयेगा तीस मार खाँ ने सोचा कि वह अब अपने खच्चर को किसी छत के नीचे खड़ा कर दे। सारे आसमान पर काले काले बादल थे। चारों तरफ अँधेरा ही अँधेरा था उसको कुछ दिखायी नहीं दे रहा था।

वह अपने हाथों को इधर उधर कर के उनसे छू छू कर महसूस कर के देख रहा था कि उसका खच्चर कहाँ है ताकि वह उसे किसी छत के नीचे बाँध सके कि उसके हाथ में भालू आ गया। वह उस पर चढ़ गया और उसे आगे धकेलने की कोशिश करने लगा।

तीस मार खाँ को यह पता ही नहीं था कि उस जानवर के साथ उसका यह व्यवहार ठीक नहीं था। वह तो बस उसकी पीठ पर बैठा हुआ था। जानवर वैसे ही बहुत परेशान था।

वह सोच रहा था कि ऐसा कौन सा जानवर हो सकता है जो उसकी पीठ पर इतनी आसानी से बैठ गया और अब उसको आगे चलने के लिये कह रहा है।

उसको लगा कि यह खतरनाक टपका ही होगा जो उसके ऊपर इतनी आसानी से चढ़ सका। उसको यह केवल लगा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास हो गया कि यह टपका ही है। वह डर गया और जैसा उसके मालिक ने उससे करने के लिये कहा उसने वैसा ही किया।

जब वे एक पेड़ के पास पहुँचे तो तीस मार खॉ ने अपनी रस्सी निकाल कर उसको उस पेड़ से बॉध दिया।

जब गॉव वाले सुबह उठे तो उन्होंने देखा कि भालू तो पेड़ से बॅधा खड़ा है। उन्होंने तीस मार खॉ की इस जीत को बड़े ज़ोर शोर से मनाया हालॉकि सबको इस बात पर आश्चर्य तो बहुत हुआ पर सच तो सामने था। सबने उसकी हीरो कह कर जयजयकार की।

खच्चर कहीं दूर जा कर मिला पानी में तर बतर बड़ी दयनीय हालत में। तीस मार खॉ महल लौटा तो राजा ने उसको सोने के रूप में बहुत सारा इनाम दिया। अब राजा को उस पर बहुत भरोसा हो गया था।

फिर कुछ दिन आराम से रहते बीत गये। तीस मार खॉ आराम की ज़िन्दगी बिता रहा था कि एक दिन उस राज्य के ऊपर एक पड़ोसी राजा ने हमला कर दिया।

राजा ने उसको फिर बुलाया और उससे दुश्मन को हराने के लिये कहा। इस बार उसने वायदा किया कि अगर उसने यह कर दिया तो वह अपनी सबसे बड़ी बेटी की शादी उससे कर देगा और उसे अपनी राजगद्दी का वारिस बना देगा।

डरा हुआ तीस मार खॉ एक बहुत बड़ी सेना ले कर दुश्मन से लड़ने चला। अब वह तो एक गॉव की एक विधवा का बेटा था उसको तो सेना के नियमों का बिल्कुल पता नहीं था। सुबह को तो लड़ाई शुरू हो जायेगी।

जैसे ही सुबह का सूरज आसमान में निकला दोनों तरफ की सेनाऐं लड़ने के लिये तैयार हो गयीं। जो लोग घोड़े पर चढ़ कर लड़ने वाले थे वे अपनी अपनी तलवारें और बड़ी बड़ी गदाऐं ले ले कर एक दूसरे की तरफ भयानक दृष्टि से देखते हुए मैदान में खड़े हुए थे।

तीस मार खॉ ने जिसने पहले कभी कोई लड़ाई लड़ी नहीं थी। उसको तो घोड़े पर बैठना तक नहीं आता था। घोड़े पर सीधा बैठने के लिये उसने अपने आपको घोड़े से बॉध रखा था। लड़ाई शुरू करने के लिये ढोल बजने शुरू हो गये। दोनों सेनाओं ने एक दूसरे पर हमला करना शुरू कर दिया।

राजा की तरफ से तीस मार खॉ उस सेना का सेनापति था और वह उसको ले कर आगे बढ़ने वाला था सो जैसे ही उसके घोड़े ने आगे बढ़ना शुरू किया और तेज़ भागना शुरू किया तो वह खुद डर गया। उसकी तलवार जमीन पर गिर गयी सो उसने तलवार उठाने की बजाय पास में खड़ा एक पेड़ का तना पकड़ लिया।

पर वह तो अपने घोड़े से कस कर बॅधा था जो बहुत तेज़ रफ्तार से भागा चला जा रहा था। उधर तीस मार खॉ ने डर के मारे

पेड़ को भी कस कर पकड़ रखा था वह उसको भी नहीं छोड़ रहा था सो इस खींचातानी में वह पेड़ जड़ से उखड़ आया।

दुश्मन की सेना ने देखा कि तीस मार खॉ एक पेड़ का तना हाथ में लिये हुए अपनी पूरी रफ्तार से उनकी तरफ चला आ रहा है। चेहरे पर उसके डर था और कन्धे पर पेड़ का तना।

यह देख कर वे डर गये और तुरन्त ही पीछे भाग लिये। दुश्मन हार गया था राज्य में शान्ति हो गयी। तीस मार खॉ राजा के पास महल लौट आया। राजा ने अपने वायदे के अनुसार अपनी सबसे बड़ी बेटी की शादी उसके साथ कर दी।

उसके बाद तीस मार खॉ फिर कभी लड़ने नहीं गया और शान्ति से अपने दिन गुजारे।

इस तरह एक मक्खी मारने वाले को अपनी शान बघारने का यह फल भुगतना पड़ा। उसकी किस्मत अच्छी थी वरना उसकी शेखी सब ऐसी की ऐसी ही रखी रह जाती।

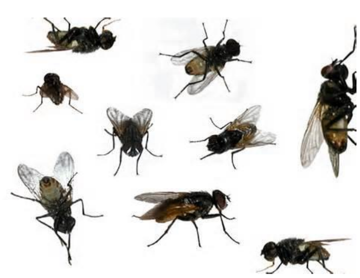

22 जाट मरा तब जानिये...

उत्तर भारत के उत्तर प्रदेश और पंजाब आदि प्रान्तों की तरफ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों के अलावा एक और जाति होती है और वह है जाट। यह एक अजीब सी कौम है जिसके बारे में कई चुटकुले और कहावतें मशहूर हैं।

एक कहावत है "जाट मरा तब जानिये जब तेरही तीजा होय"। सामान्यतया कोई भी आदमी जब मर जाता है तो मर जाता है। बाद में तीसरे दिन उसके फूल चुन लिये जाते हैं दसवें दिन से घर में सामान्य खाना बनने लगता है और तेरहवीं को तेरह ब्राह्मणों को खाना खिला कर शोक का समय भी समाप्त कर दिया जाता है। यह सामान्य रीति रिवाज है।

पर वहॉ के लोगों का कहना है कि जाट के मामले में यह सच नहीं है। उसके मामले में कहना यह है कि जाट को मरा तब मानो जब उसका तीजा और तेरहवीं दोनों हो जायें। यानी वह अपनी तेरहवीं से पहले भी ज़िन्दा हो कर आ सकता है। केवल उसके शरीर को जला कर ही यह नहीं माना जा सकता कि वह मर गया है।

पर कभी कभी तो जाट इससे भी आगे बढ़ जाता है यानी वह अपना तीजा तेरहवीं होने के बाद भी ज़िन्दा हो कर आ जाता है।

इसके बारे में हम तुम्हें इस कहावत के जन्म की एक मजेदार कहानी सुनाते हैं।

गॉवों में अक्सर लोग किसान होते हैं। खास कर के जब उनकी फसल पकने लगती है तो उसकी देखभाल बहुत जरूरी हो जाती है ताकि उसे कोई चुरा न ले जाये या फिर दिन में चिड़ियें आदि पक्षी आ कर न खा जायें या फिर रात को जंगली जानवर आ कर उसे बर्बाद न कर जायें।

दिन में फसल को चिड़ियों से बचाने के लिये लोग बिजूखा या काकभगोड़ा[70] का इस्तेमाल करते हैं। और रात को जंगली जानवरों से बचने के लिये किसान खेत में ही किसी पेड़ पर मचान बना कर रात रात भर जाग कर पहरा देते हैं।

ऐसे ही एक गॉव में एक जाट किसान का खेत था तो उसने भी अपने खेत का पहरा देने के लिये एक पेड़ पर मचान बनायी और रात को पहरा देने लगा।

एक रात एक साधु बाबा कहीं से घूमते हुए वहॉ आ पहुॅचे। रात ज़्यादा हो गयी थी तो साधु ने किसान से वहीं अपने पास रात भर के रुकने के लिये पूछा। किसान ने सोचा कि इतनी रात को ये साधु बाबा अब कहॉ जायेंगे और फिर एक से भले दो सो उसने हॉ कर दी। सो साधु बाबा भी वहीं रुक गये।

---

[70] Translated for the word “Scarecrow”. See its picture above.

साधु बाबा थके हुए थे जल्दी ही सो गये और खर्राटे मारने लगे। किसान बेचारे को तो अपना पहरा देना था सो वह जागता ही रहा।

किसान को चिलम पीने की आदत थी। वैसे भी वह उसको जागने में सहायता करती थी। सो जब वह अपनी चिलम पी रहा था तो उसकी एक चिनगारी मचान के ऊपर जा पड़ी।

अब मचान तो लकड़ी और पत्तों की बनी हुई होती है सो उसने जल्दी ही आग पकड़ ली। किसान को पता भी नहीं चला। जब ज़्यादा आग बढ़ गयी तब वह वहॉ से कूदा।

अब वह खुद तो वहॉ से कूद गया पर अपनी सारी कोशिशों के बाद साधु बाबा को नहीं बचा पाया। वह उसी में जल कर खाक हो गये।

अब वह चौधरी जाट बेचारा सोच सोच कर परेशान था कि वह क्या करे। सुबह होते होते गॉव के और लोग आ जायेंगे। उसको ब्रह्म हत्या का दोष लगेगा। उधर पुलिस आ जायेगी तो वह उसको जेल में बन्द कर देगी।

उस समय उसको यही ठीक लगा कि वह वहॉ से भाग जाये। गॉव वाले आयेंगे और साधु बाबा के जले हुए शरीर को देखेंगे तो सोच लेंगे कि लगता है खेत का मालिक चौधरी जाट मर गया पर वह खुद तो बच जायेगा। यही सोच कर वह वहॉ से भाग गया और कहीं दूसरी जगह जा कर रहने लगा।

किसान का सोचना ठीक था। सुबह को गाँव वाले आये पुलिस आयी और साधु बाबा के जले हुए शरीर को देख कर सोचा कि लगता है कि जाट चौधरी इस आग में जल कर मर गया क्योंकि वे उस आधे जले शरीर को पहचान नहीं सके। और फिर किसी ने साधु बाबा के वहाँ होने के बारे में सोचा भी नहीं था।

वे सब चले गये। साधु यानी जाट के शरीर का अन्तिम संस्कार कर दिया गया। उसका तीजा भी हो गया और तेरहवीं भी हो गयी। समय गुजरता गया। लोग इस बात को भूल गये। घर वाले भी जाट को मरा जान कर भूल गये।

कुछ समय बाद जाट ने सोचा कि अब मामला दब गया होगा अब मैं अपने घर चलता हूँ। सो एक रात वह अँधेरे में छुपते छुपाते अपने घर आया और दरवाजे पर दस्तक दी। घर वालों ने दरवाजा खोला तो मरे हुए जाट को दरवाजे पर खड़ा देख कर भूत भूत चिल्लाने लगे तो वह जाट यह सुन कर वहाँ से फिर भाग लिया।

कई बार कोशिश करते करते वह इस बात को अपने घर वालों को समझाने में सफल हो सका कि वह भूत नहीं था असल का आदमी था। बाद में उसने उनको असली मामला भी खोल कर बता दिया कि उस रात क्या हुआ था।

उसके बाद वह अपने परिवार के साथ पहले ही की तरह रहने लगा।

तभी से यह कहावत चल निकली कि "जाट मरा तब जानिये जब तेरही तीजा होय"। बल्कि यही नहीं यह जाट तो उस जाट से भी एक कदम आगे निकल गया। यह तो तेरही तीजा होने के बाद भी घर वापस आ गया।

जाटों के चुटकुले

एक बार एक जाट अपने परिवार के साथ गंगा नहाने गया। वहाँ उसकी पत्नी गंगा में बह गयी। तो जाट जिधर से गंगा का पानी बह कर आ रहा था उस तरफ उसको ढूँढने जाने लगा।

किसी आदमी ने उससे पूछा "तुम उसको उलटी तरफ क्यों ढूँढने जा रहे हो अगर तुम्हें वह मिलेगी तो उधर मिलेगी जिधर यह पानी बह कर नीचे की तरफ जा रहा है।"

जाट ने जवाब दिया "वह तो आज तक कभी सीधी नहीं चली अब क्या सीधी चलेगी।"

23 कारूँ का खजाना[71]

बच्चो तुमने एक कहावत सुनी होगी "मेरे पास क्या कुबेर का खजाना है जो मैं तुम्हें उसमें से निकाल निकाल कर देता रहूँगा।" यह कहावत हिन्दी की कहावत है और हिन्दुओं में कही जाती है। हिन्दुओं में कुबेर धन के स्वामी हैं और वही सबको धन देते हैं इसलिये यह कहावत उन्हीं के नाम पर है।

तो इसका अर्थ यह होता है कि क्योंकि उनके पास बहुत सारा पैसा है और वह जब चाहे जितना पैसा किसी को या सबको भी दे सकते हैं। तो जब किसी न खत्म होने वाली चीज़ की बात आती है तो कुबेर का खजाने की बात आती है। पर अधिकतर यह पैसे को मामले में ही इस्तेमाल किया जाता है।

जैसे हिन्दुओं में यह कहावत है तो मुसलमानों में यह कहावत है "मेरे पास कोई कारूँ का खजाना थोड़े ही गड़ा है जो मैं तुम्हें उसमें से निकाल निकाल कर देता रहूँगा।"

तो अब यह कारूँ कौन है। तुमको यह जान कर अश्चर्य होगा कि कारूँ हमारे कुबेर की तरह कोई देवता नहीं थे। इनका पूरा नाम कारूँ मूसा था। इनको मुनव्वर भी कहते थे क्योंकि ये बहुत ही मीठा गाते थे।

[71] Qaroon Aur Uska Khazana. Taken from the Web Site: http://aboutislam.net/reading-islam/understanding-islam/the-story-of-qarun-kurah-in-the-quran/

ये मोसेस के देश इजरायल के थे और मोसेस के समय में इन्होंने बहुत बेरहम काम किये।

जब मिश्र के राजा फैरो ने इजरायल के लोगों को अपना दास बना लिया और उनसे बुरा व्यवहार करना शुरू किया – वह उनको झोंपड़ियों में रखता था उनसे बहुत काम लेता था उनको बहुत मारता पीटता था तो जाहिर था कि इजरायल के लोगों में कभी न कभी तो उपद्रव फैलना ही था।

इस उपद्रव से बचने के लिये फैरो ने इजरायल के लोगों को खरीद कर उनसे उन्हीं के बारे में सूचनाऐं इकट्ठा करनी शुरू कीं। इसके लिये उसने उनको बहुत सारे पैसे दिये। कारूँ ने उसी में बहुत पैसा कमाया।

उनके खजानों की आलमारियों के बारे में ऐसा कहा जाता है कि उनकी चाभियाँ चमड़े की थीं और **60** खच्चर उनको उठाते थे। बहुत सारे लोगों का ख्याल था कि वह कैमिस्ट्री की कला जानते थे जबकि दूसरे लोगों का कहना है कि वे इस्मे आज़म जानते थे जिसकी वजह से उन्होंने माल और दौलत जमा कर ली थी।

मगर वह बस बहुत सारे दिवालिया लोगों में एक करोड़पति थे जिन्होंने गलत तरीके से इतनी दौलत जमा कर रखी थी इसी लिये वह उनके लिये बहुत बड़े खजाने वाले थे।

कहा जाता है कि कारूँ अपनी पोशाक को एक बालिश्त ज़्यादा लम्बा रखते थे। कारूँ खूब बनावट शान शौकत और सिंगार के

साथ निकलते थे और इसी तरह उनके नौकर और सवारियॉ भी होते थे।

बस तभी से यह कहावत निकल पड़ी कि “मेरे पास कोई कारू का खजाना थोड़े ही है...”

Books in History Series

1. **Lone Country of Thirteen Months. 12 articles. 168 p.**
   तेरह महीनों का अकेला देश

2. **Our Great People. 22 people. 164 p.**
   हमारे महान लोग

3. **Beginnings of the Books. 12 books. 148 p.**
   पुस्तकों के आरम्भ की कहानियॉ

4. **Our Great Scientists. 12 scientists. 70 p**
   हमारे महान वैज्ञानिक

5. **One Event Changed the Life. 9 people. 64 p.**
   जिनके एक घटना ने जीवन वदले

6. **Lobo's Ethiopia of 1625.**
   1625 का लोबो का इथियोपिया

7. **Birth of Proverbs. 23 proverbs. 134 p**
   कहावतों का जन्म

8. **Stories of Birbal. 25 stories. 80 p.**
   बीरबल की कहानियॉ

9. **Raja Rasalu. 21 stories. 368 p.**
   राजा रसालू

शीवा की रानी मकेडा, देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
राजा सोलोमन, देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ

Updated in 2022

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन गुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना पारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022